# शनिकथा

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन

।। श्रीः ।।

# शनिकथा

शेखावाट्यन्तर्गत शहर फतेपुरवासी
गौड-ब्राह्मण हरीतवाल ब्राजलालीय
**श्रीयुत पण्डित रामप्रताप शर्मा**

द्वारा शनिग्रह पीडा निवारणार्थ
अत्युत्तम छन्दबद्ध दोहा, चौपाई कवित्तों में वर्णित।

**खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन**
**बम्बई-४०० ००४.**

संस्करण : जून २०१२, सम्वत् २०६९

मूल्य :- ३५ रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक :
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई- ४०० ००४.

Printers & Publishers
**KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS**
**Prop: Shri Venkateshwar Press**
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press,
66 Hadapsar Industrial Estate, Pune -411 013.

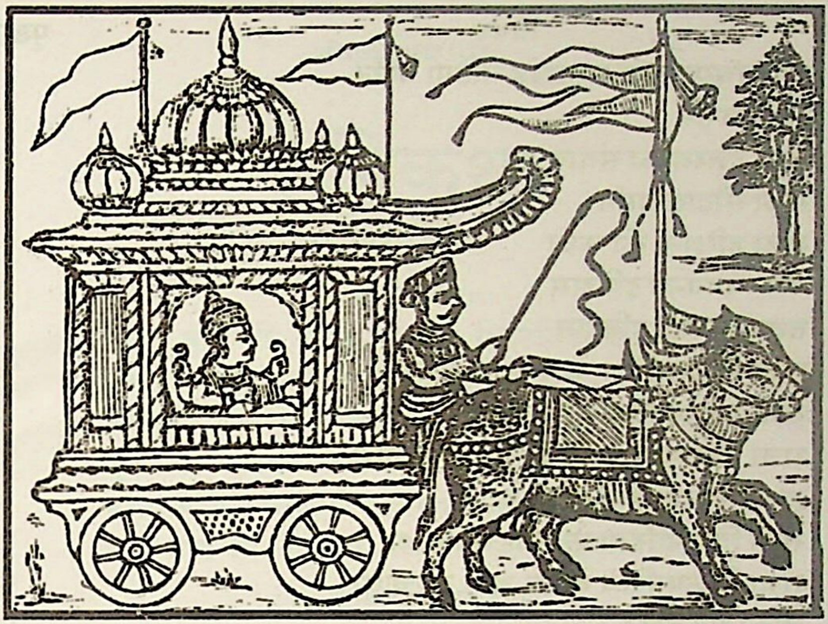

## -: प्रस्तावना :-

प्रकट हो कि, सर्वजनों के कल्याणार्थ तथा शनिदेव की क्रूर दृष्टि निवारणार्थ यह शनिकथा अत्युतम रीति से श्रीयुत पण्डित रामप्रताप शर्माजी ने निर्माण की है। इसमें राजा नल तथा राजरानी दमयंती तथा अयोध्याधिपति राजा हरिश्चन्द्र तथा मानव राजा विक्रमादित्य प्रभृति को शनि दशामें प्राप्त हो अनेक दुःख पाने तथा पुनः शनिदेव की पूजा से पूर्ववत् राजसुख भोगने का पूरा विवरण है। इसके पठन-पाठन से शनिदेव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और जिस पुरुष पर साढेसाती शनैश्चर आया हो उसको तो इस पुस्तक का अवश्य ही पाठ करना चाहिये। यह अलभ्य ग्रन्थ उन्हींके पुत्र पण्डित हीरालालजी के द्वारा प्राप्त कर सज्जनों के दृष्टिगोचर किया गया है।

**सम्वत् : १९८५** **खेमराज श्रीकृष्णदास**

**अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस.**

# शनिकथा की अनुक्रमणिका


| अध्याय | विषय | पृष्ठाङ्क |
|---|---|---|
| १ | मंगलाचरण तथा भरतखंड महिमा वर्णन | ५ |
| २ | स्वप्न वर्णन | ११ |
| ३ | राजा दशरथ का संवाद | १४ |
| ४ | राजा सौदास प्रसंग | १८ |
| ५ | राजा हरिश्चन्द्र की कथा | २० |
| ६ | नल-दमयन्ती इतिहास | २४ |
| ७ | तथा दमयन्ती इतिहास | २७ |
| ८ | राजा विक्रमादित्य के गुणगान वर्णन | ३३ |
| ९ | राजा विक्रमादित्य का वनवास | ३६ |
| १० | राजा विक्रमादित्य के कलंक लगने तथा हाथ पैर काटे जाने की कथा | ३९ |
| ११ | राजा विक्रमादित्य के व्याह की कथा | ४८ |
| १२ | राजा विक्रमादित्य के घर आने की कथा | ५६ |
| १३ | वाहन भेद वर्णन | ५९ |
| १४ | शनिदेव की पूजा विधि | ६१ |
| १५ | शनिकथा माहात्म्य | ६३ |


।। इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।।

श्रीगणेशाय नमः

# शनिकथा

*****

-: छप्पय :-

सिद्धि बुद्धिपति नमो नमो पुनि विघ्नविदारण।
एकदंत हेरंब गौरीसुत विपति विदारण।।
लंबोदर गणराज गजानन असऱ्या सारण।
पूजैं शेष महेष अचर-चर के तुम कारण।।
भववारिधिके तरणको अशरणके नौसम शरण।
हाथ जोड़ विनती करूँ गणपति मेरे दुखहरण।।१।।

-: कुण्डलियां :-

शीश नमाऊँ शारदा ब्रह्मा विष्णु महेश।
तीनरूप गुरुदेवको धरहूँ ध्यान हमेश।।
धरहूँ ध्यान हमेश ज्ञान करुणाकर दीनो।
सद्संसार असार निगम निरधार सुचीनो।।
सुन्दर कथा बनाय धर्मका ठाट जमाऊँ।
ब्रह्मा विष्णु महेश शारदा शीश नमाऊँ।।१।।
शाकंभरि माता नमो काय वाक मन प्रेम।
निशिदिन ध्यान धरूँ हिये यो मेरे नित नेम।।
यो मेरे नितनेम क्षेम मंगलकी करणी।
शरणी संपत तणी दुःख दारिदकी हरणी।।
होत विश्वविख्यात भक्त वांछित फल पाता।
काय वाक मन प्रेम नमो शाकंभरिमाता।।२।।

-: छप्पय :-

कही गुसांई सूर्यमल्ल इक कथा बनावो।
शनि मोटो है देव छंद गुण गुंथ सुनावो।।
जग भूल्यो है राह धर्मको रंग चढ़ावो।
सुन-सुन उपजै प्रेम दुनीकै भाव बढ़ावो।।
सुयश तुम्हारो होत है बहुत भांत विनती करी।
संस्कृत भाषा देखकर रचनेकी मनमें धरी।।१।।

शेखावाटी बीच सहर इक है फतनांपर।
पंडित रामप्रताप ज्ञानगुणको रतनाकर।।
काव्यालंकृति देवगिरा प्राकृत रचनासर।
मनमें हुयो हुलास देव शनिका वचनांबर।।
सार सारहू चीनता वृथा झोड़ नाहीं घणूं।
अल्पबुद्धि नर कारणे सौरिकथा भाषाभणू।।२।।

### -: दोहा :-

जय गोविंदजीको नमो, सब विद्या भरपूर।
जिनकी महिमा सुनतही, दुश्मन भाजै दूर।।१।।
पंडित रामप्रताप हैं, देशनमें सरनाम।
ज्योतिष वेद पुराणवल, मानै मुलकतमाम।।२।।
कथाकरी शनिदेवकी, लोकनके हितकार।
भूल–चूक दीखै कछू, लीजो सुघर सुधार।।३।।
छंद बनाऊँ चावसे, अपनी मति अनुसार।
परमरसीली है कथा, पंडित करो विचार।।४।।
जम्बूद्वीप शिरोमणि, सात द्वीपके मांय।
ताका खंड भयानवै, झूठ रती इक नांय।।५।।
भरतखंड सबसे अधिक, ब्रह्मावर्त्त पुनीत।
गंगा यमुना बीचमें, राजा भए सुनीत।।६।।
कर्म किया ह्यां भोगता, सब लोकनमें जाय।
कर्मभूमि तासे भई, दीना भेद बताय।।७।।

### -: चौपाई :-

भरतहि खंड कर्मकी भूमी। केइ दातार केइ नरसूमी।।
जैसा बीज इहां जो बोवै। परलोकन तैसा फल पावै।।१।।
कर्म योग मानुषदे आवै। ह्यांको खाट्यो सगलै खावै।।
सच्च बात कहता हूं तुमकूं। भजन करै सो जीतहि जमकूं।।२।।
मूरखजन समझै नहिं कोई। कर प्रमाद अमृत कर खोई।।
भजन बिना नर भली डबोई। जानत लोक बिगाड़ै दोई।।३।।
काम क्रोध की तजै उपाधी। संयम योग ध्यान तप साधी।।
कर्म निकाम मोक्षपद आधी। मन विराम आराम समाधी।।४।।
वेदव्यास शुकदेव सिखायो। चार वेदको अर्थ दिखायो।।
राम नाम तत सार बताया। उमा प्रती श्रीशिवने गाया।।५।।
मात पिता बन्धु सुत भाई। स्वारथ के साथी बनिताई।।
मेरी मेरी करत फिरंता। करम भ्रष्ट होय अधो गिरंता।।६।।

तीन जन्म की सूझै चौड़े। करै चाकरी धरती फोड़ै ।।
छत्र फिरै चढ़ता केइ घोड़ै। केइ खोवै केइ पूंजी जोड़ै ।।७।।
रात दिवस वायू सम दोड़ै। केइ येक फिरत नाजके तोड़ै ।।
चोरी जारी झूठा झोड़ै। भुगतै कैद पड़ै पग खोड़ै ।।८।।
हाथ लगायर पगां लुझावै। जम फांसी चौरासी पावै ।।
मिथ्या भरम बन्या है कबका। राम संगाती आखिर सबका ।।९।।
हरहित टुक अन्नादिक देवो। नाम सैंस नितकी उठ लेवो ।।
छसै दोयसै सेई कीसा। नाव लिया विन मृतकहिं जीसा ।।१०।।
वेद पढ़ंता गुरुको बूजी। राम समान वस्तु नहिं दूजी ।।
कायाधव ओर तिरगए धूजी। सोई सत्य हमां नै सूजी ।।११।।
रात दिवस रटते हैं संता। शेष महेश लह्यो नहिं अंता ।।
नेति नेति कर वेद बखान्यो। सोई सारब्रह्म मुनि मान्यो ।।१२।।
विषयन का सुख विषका बिंदू। राम रट्यां तिरजा भवसिंधू ।।
और उपाय नहीं है कोऊ। राधा कृष्ण भजोनी दोऊ।।१३।।

-: दोहा :-

सातपुरी जिनमें सिरै, मालव देश उजीण।
राजा विक्रम भानुता, चौंसठ कला प्रवीण ।।१।।
चवदै विद्या जिनगही, रही न छानी कोय।
परदुख भंजनहार नृप, तैसा विरला होय ।।२।।

-: छन्द- वीरखसायन :-

पुरी अवंती शोभावंती, ज्यां विक्रम से राजा ।।
महाकाल की महर शहर में, नित ही बाजत बाजा।।टेर ।।
क्षिप्रा गंगा चलत तरंगा है अपरंपारी ।।
स्नान करन को नित उठ आवत सब ही नर-नारी ।। ध्यान धरते हैं त्रिपुरारी ।।
सात बार नोनिवार जिनमें खुल रही टवारी ।। देखती हैं आलम सारी ।।
वारी भंरी बूढी ठेरी टूलत है लारी ।। बजाती है कोई तारी ।।
हंस-हँस गावत गीत प्रीतसूं मिल-मिल छिनगारी ।।
शोभा वरणी न जाय सज्या है, बहुरंगी साजा ।।१।।
चौरासी हैं लिंग सदाशिव के च्यारूं द्वारी ।।
आठ पहर दिन रात हमेशा करते रखवारी ।। मेटदी असुरनकी धारी ।।
नवदुरगा के थान मान ज्यां होती पुजारी ।। वेद धुनि ब्राह्मण उच्चारी ।।
रही जागती ज्योती भवानी भक्त प्रतिपारी ।।
हर सिद्धि-ऋद्धि सिद्धि की दाता सिद्ध करै काजा ।।२।।

मांधाता नल भरत भगीरथ अंबरीष सगरा ।।
नृग ययाति यदुदेव पृथूजी रचदीनां नगरा ।। बतावै भूले कूं डगरा ।।
दश अठ्ठारा पुराण में जिनका वरण्यां झगरा ।। भये भूमीपर उजगरा ।।
षट् दिलीप रघु रंति देव गय नहुषन का चगरा ।।
जस कीरति विक्रम की सुन गये सुरपुर कूं लाजा ।।३।।
चतुरंगी दल सज्या फरकता पश्चरंगी झंडा ।।
निज प्रताप से हटा दिये हैं वैरी गण बंडा ।। जानते हैं भारत खंडा ।।
दान यज्ञ नित पुराण बंचता कीरति ब्रह्मंडा ।। पिशुन जग दुख पावत चंडा ।।
यती सती शुभचिह्नवती सूं गुनैगार दंडा ।।
परदुख भंजनहार रीत से बांधी मरयादा ।।४।।

### -: छन्द मनहुलास :-

कहूं एक इतिहास सुनो दे काना ।।
शनि-विक्रम संवाद सांच कर माना ।। टेर ।।
महाकाल महाराज पुरी ऊजीणी ।।
समझ करो गुरुज्ञान बात है झीणी ।।
जां आनन्द बहुत उछाह बाजत बाजा ।।
करै धर्म प्रतिपाल विक्रम राजा ।।
दूर किया दुख द्वन्द ने लोक नै जाना ।।१।।
जां भरे बहुत भंडार द्रव्य माया के ।।
सबी बात के ठाट पुण्य पाया के ।।
नहीं मोह मस्ताक पुत्र जाया के ।।
खूब करे रिछपाल विप्र गाया के ।।
सप्त अंग बहु संग रंग है नाना ।।२।।
वाजत ढोल मृदंग शंख घन गरजै ।।
मुरली धुनि मोचंग झाँझ ढप परजै ।।
नोबत घुरे निसान सनाई झरजै ।।
रणसिंगा षडताल बाँकिया सरजै
मंगल गावै गीत गुणी मिलताना ।।३।।
म्यांना पिनसूरथाश्च पालकी हसती ।।
मालवमें सरनाम अवंती वसती ।।
नर-नारी सुख सदा करत है मसती ।।
राजा के परताप नहीं अरि दसती ।।
नित-नित नया तिहार रंग रस ठानां ।।४।।

रत्नजटित कंचन के महलां माहीं।।
सुख सूता नृप फूलन सेज बिछांहीं।।
अर्धरात के समय सुपन इक आयो।।
चेत–चेत यूं भाषत भूप जगायो।।
मैं हूं शनि मोटा देव धरो तुम ध्याना।।५।।
तुमरे हित की कहूं सत्यकर मानी।।
मैं क्रूर महाग्रह दृष्टि क्रूर नहिं छानी।।
मैं सदा दुख देऊं साढसती तोय आई।।
पूज्यां से सुख बिन पूज्यां है दुखदाई।।
चित चावै सो करो कह्या सब व्यांना।।६।।
कृपा करी महाराज दरश दिखलाया।।
नृप निरख रूप विकराल नाहिं घबराया।।
सुन–सुन शनि का वचन टुके मुसकाया।।
मैं करूं भक्ति भगवान एह फरमाया।।
कर्मरेख नहिं टरै व्यास कहलाना।।७।।
नृप भाषै शनिराय करोनि विचारा।।
मोय को नहिं दीखे दुःख मेटनेवारा।।
कोप कियो शनि देख मजा अव म्हारा।।
क्या वृथा बनाया हरी वेद का भारा।।
अंध घोर जग मांय प्रगट ज्यूं भाना।।८।।
पुरुशारथ क्यूं करै धर्म की हानी।।
नास्तिक पंथ उठाय बकै तू बानी।।
होज्या एकूं कार समझ अज्ञानी।।
माचै घोटा भेल धरक जिनगानी।।
पंडित पूछ बुलाय और परधाना।।९।।
पंडित रामप्रताप रीत उपजाई।।
दोवन को संवाद मोद मद गाई।।
इह भांति कथा परसंग रंग छाई।।
होत काम कल्याण बात चित चाई।।
भाग जोग मिल जाय भली काटांना।।१०।।

## –: चौपाई :–

पुरी अवंती वास सवायो। राजा विक्रम भानु बतायो।।
रत्न जडित मंदिर के मांही। सूतो थो सुख सेज बिछांही।।१।।

अर्धरात सुपनै शनि आयो। नृप विक्रम कूं रूप दिखायो।।
बोले धमक सुनो इक बानी। क्रूर दृष्टि मेरी नहिं छानी।।२।।
साढसती तुमको अब आई। दान पुण्य जय सदा सहाई।।
कालो वर्ण तेल लपटायो। भैंसे ऊपर चढकर आयो।।३।।
कालो कंबल कर करवाला। दंड लियों कूं डलिया चाला।।
राजा सुन मन कियो विचारा। मेघनाद बोले ललकारा।।४।।
कूंन देव आये किन काजा। बातां पूछै विक्रम राजा।।
विकृत वदन भनत शनिवानी। तुम राजा दीसत अभिमानी।।५।।
सूरज सुत मैं हूं शनिदेवा। सब ही हमरी करते सेवा।।
धूप दीप सिंदूर चढावै। ध्यान धरै अरु शीश नमावै।।६।।
ते नर खंता कदे नहि खावै। साढसती सुख सहित विहावै।।
राजा तुरत सुनावै ज्वाबा। ग्यां मैं नहीं ज्ञान गरकावा।।७।।
कूंन जिवावै कूं नहिं मारै। कूंन लेख विधिनाके टारै।।
सोच नहीं देवन कू मंदा। कहा दोष दीजे शिरबंदा।।८।।
अपना किया आप ही भर्त्ता। सुख दुख को दूजो नहिं कर्त्ता।।
भूल्यो आप और भरमावै। इसै देव कूं कूं न मनावै।।९।।
एक देव माया से मिलकर। नाना रूप नीर में दिनकर।।
सत चित आनंद एक अटूठा। नाम रूप सब जग है झूठा।।१०।।
सुन नृप वैन कोप शनि भाषै। ज्ञान गर्व नरपति नहिं नाषै।।
मेरी सेवा करै न राजा। विगरै बातरु होय अकाजा।।११।।
अब तूं देख बजाऊं बाजा। सावधान होय करो इलाजा।।
इतनी कह भये अंतर्ध्याना। उचट नींद नृप जगे सयाना।।१२।।

राजोवाच :- -: छप्पय :-

प्रारब्धके योग दुःख सुख भोगै दुनियां।
गाफिल गोता खाय मर्म कूं जानै गुनियां।।
करत मूढ हरि छांड आन देवन की पूजा।
एक निरंजन देव और नहिं मांनू दूजा।।
बात बनावो हर किसी गरज काहुसे नासधै।
कमल दिवानी बहगई राई घटै न तिल बधै।।१।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय
पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां प्रथमोध्यायः।।१।।

*****

-: दोहा :-

देख्यो सुपन जंजाल मैं, चेटक आधी रात।
सुखसे रैन विहायगी, तबहिं हुयो परभात।।१।।

-: छन्द- पद्धरी :-

बंदीजन मिलकै करत सोर। तुम उठो भूप अब भयो भोर।।
कर शौच स्नान पुनि धरो ध्यान। याचक जनकूं दियो बहुत दान।।१।।
फिर आन सभा साजी हुजूर। ता आमखास भरियो भ्रपूर।।
जुर आये मंत्री सुभट शूर। दुष्मन भागत हैं देख दूर।।२।।
अरु यथा योग्य बैठे अनेक। चलि राजनीति करते विवेक।।
कोउ अरज सुनावै कामदार। पंडित मिल भाषैं सप्तसार।।३।।
षट् शास्त्र माहिं ते हैं प्रवीन। करते प्रबंध रचना सुचीन।।
कंकू प्रवुद्ध शिवदत्त नाम। परभाकर गणपति सिद्धथाम।।४।।
सप्तम जिन मांहि कालिदास। नित नित करत प्रतिभा प्रकाश।।
शिर चमर छत्र ढुरते हमेश। जां रुष्टमान गिरिजा गणेश।।५।।
नूतन प्रबंध कविता करंत। मनकी लख समसा लघु पुरंत।।
कीरति यश जाको सर्वदेश। भय कंपमान दुर्जन नरेश।।६।।
तस्कर छिप बैठे माररोष। कूडो नहिं देवत काहु दोष।।
तप तेज प्रबल चढरयो जोस। कहुँ सुनि नांय है लूट खोस।।७।।
बचते ज्या वेद पुराण बोत। पूरब राजनकी कथा होत।।
गुण अवगुण चीनत नृप सुभाव। खलगुण बिकता नहिं एक भाव।।८।।

-: दोहा :-

राजा पूछत पंडिता, कहो स्वप्नका भेद।
साँचा वा झूठा बन्या, मेटो मनका खेद।।१।।
पंडित भाषै नृप सूनो, सुपना दोविध होय।
फल देता है शुभ अशुभ, भणक्या देख्या तोय।।२।।

**विक्रमादित्य वाक्य :-**

महिष चढ्यो इक देवता, आयो आधी रात।
कृष्णवर्ण मोकूं भजो, यूं बोल्यो धमकात।।३।।
हम बूज्यो तुमको नहीं, नाम सुनावो बोल।
भले बुरेकी पारखा, मनमें लेऊं तोल।।४।।

**शनि वाक्य :-**

नाम शनैश्चर देव मैं, आयो द्वादश रास।
हमरो ध्यान धरो नहीं, करहूँ राज्य विनाश।।५।।

कह्यो नापांम्यो मैं कछू, रती न मानी त्रास।
करणैवारा एक है, सुख दुख जगन्निवास।।६।।
रुष्ट होय पूठो गयो, वाहन महिष जु पाय।
सो मैह पूछूं पंडिता, करजे कौन उपाय।।७।।

पंडिता ऊचुः :- -: सोरठा :-

अशुभ और शुभ जाण, सुपना दो विध होत है।
कहता वेद पुराण, लाभ करै केईखोत है ।।१।।

-: दोहा :-

सुख सूल्यां जो खेदते, होत चित्त विक्षेप।
वो झूठो पहचानिये, साँचो कर्म सचेप।।८।।
धारत है सो कुछ नहीं, सुपनेमें नरदेह।
दीखतमें दोय भेद हैं, सुत बंधू धन गेह।।९।।
सांचा झूठा होत है, हेरू समय प्रमान।
यो सुपनों आछो नहीं, तुम क्यों भये अजान।।१०।।

-: चौपाई :-

पहले पहर सुपन जो आवै। बरस एकमें फल भुगतावै।।
दूजा पहर सपन जो खासा। फल दिखलावै अष्टम मासा।।१।।
तीजा पहर सुपन जो जैसा। मास षट्कमें फल हो तैसा।।
चौथे याम सुपन जे आवत। एक मासमें फलही पावत।।२।।
अरुणोदयमें दशदिन जानो। गो खोलनमें तुरत पिछानो।।
नद्यब्धि तरणं आकाशे। गत्यऽर्कोदय रुधिर प्रकाशे।।३।।
ग्रह तारा मंडल शुभकारी। पर्वत रोहण महल अटारी।।
कांचो मांस मद्यको पीनो। कृमि विष्ठा लेपन सुख जीनो।।४।।
भूषण रतन दहीको भक्षण। श्वेत वस्त्र चंदन सुविचक्षण।।
तुस पंकज राजा अरु क्षत्री। देव विप्र गुरु गोवृष सत्री।।५।।
हस्त्यारूढ क्षीरि फल तरुवर। दर्पण पुष्प अलंकृत सरवर।।
घोडा सोनो सरुदित मृतहि। गमन अगम्यां धन्य जुकृतहि।।६।।
क्षीरी वृक्ष देखकर फूल्यो। धन लाभै शीघ्रहि नर भूल्यो।।
श्वेत सर्व ग्रसता कर दैणो। लाभ सहस्र दशम दिन कैणो।।७।।
बीछू सर्प ग्रसै जलमांहि। अर्थ सिद्धि अरु विजय सुताहि।।
गिरि मंदिर चढ तिरता सागर। दास कुलीन भूपगुण आगर।।८।।
तलावमें जीमै घृत पायस। पद्म पत्रमें राज सिखायस।।
क्रौंची कुर्कुटी और बलाका। कुलजा कन्या त्रिया मिलाका।।९।।

वेडी घलै बाहुकी फांसी। धन सुत लाभ आवती हाँसी।।
आसन यान देह गृहशज्या। ज्वलित जगे श्रीपावसलज्जा।।१०।।
निर्मल खड्ग पादुको पानह। चोखो अन्न तुरत सुख जानह।।
दहि देख्यो अरु पायो नीको। घृतलाभ्यां यश खायां फीको।।११।।
शस्त्र पेष्टितो गढपति जीवै। क्षीर सफेन सुधारस पीवै।।
नाग पत्र अगुरू करपूरा। सीस्युंजव गोधूम सतूरा।।१२।।
दीप शंख मङ्गल धुनि बाजा। सिंहध्वजा सिंहासन राजा।।
वाडी बाग बावड़ी कूवा। कोकिल भ्रमर मोर हरि सूवा।।१३।।
शुभका भेद कह्या बिजनेसी। घणी समझता सुघर तनेसी।।
खोटा सुपन कितेक सुणाऊं। भली होण परिहार गिणाऊं।।१४।।
दुष्ट सुपनु सुनियो रे भाई। देख्यो सर्प नहीं सुखदाई।।
गर्दभ ऊंट महिष अज काला। मुंडितनग्र जायकी माला।।१५।।
भस्म बेष कीचडमें गर्त्ता। वैपरीत्य गति निश्चय मर्त्ता।।
खोल्यां झूण्ड कामिनी घेरै। दक्षिण दिशमें होत सबेरै।।१६।।
विषको भोजन अहिको डसवो। निश्चय जाण याम्यपुर वसवो।।
धन देवै पादांगुलि छूवै। शीश चढ्या म्हीनै मैं मूवै।।१७।।
लिपट्या सर्प जगै नर जोई। दुःख घणोके मरणो होई।।
मृतत्रिय संग तेलको स्परसन। श्राद्ध होम शुभ मृतको दरशन।।१८।।
अङ्गहीन होवै स्वर भङ्गा। सो नर स्नान करजो गङ्गा।।
स्रवत वीर्य देहे दुर्गंधी। शिथिल होय ज्यावै तनु सन्धी।।१९।।
इष्ट विनाश वियोग जनावै। भाग योग भागवत सुनावै।।
गीध कपोत काक जे पीडै। शिवा शृगाल रीछ कपि झीडै।।२०।।
जल डूबत अरु अगन प्रवेशा। उलकापतन पूयास्थि विशेसा।।
चर्म मूत्र विष्ठाको भोजन। स्वशिरको छेदन बिन खोजन।।२१।।
छिन्न भिन्न अपने पर पेखै। पक्व मांस खांणो दुख देखै।।
तैल कपास लोह खल लाभै। लाल कृष्ण सुक्खसन पराभै।।२२।।
वधिर अन्ध अरु श्रोतस हरणो। मूर्छा मोह नेष्ट व्याकरणो।।
बंबई किंशुक नींवपर चढता। संनिपात वह क्यों ज्यूं पढता।।२३।।
बिकटै-र्घात शस्त्र पाषाणा। तडित निरभ्र धूलि वरषाणा।।
तेजहीन रवि चन्द्र भला नाहिं। काणू षोडो लूलो पङ्गलाहि।।२४।।
घास फूस इन्धन कट धूमा। देख्यो शुभ नहिं कृपणह सूमा।।
सूको रूख कटीलो नेसा। होतो काम लगत है ठेसा।।२५।।
भटकत फिरो देश परदेशा। वणती बात चढै नहिं पेशा।।२६।।
नाव चढ्यो तिरता है नदी। जैमत पडैके करता वदी।।
झाडी शोक प्लक्ष करवीरा। फूल्या देखै शोक सुधीरा।।२७।।

श्वेत छाग चावल अरु छाछी। कदीस्वप्न देखी नहिं आछी।।
विप्रदान दे गऊ चरावो। महामृत्युंजय जाप करावो।।२८।।
ज्यूं ज्यूं गुरु बतावै सन्था। त्यूं त्यूं सूझत निगम सुपन्था।।
वणी कहांहो ज्याजल जन्था। बहुत भेद समझो पड ग्रन्था।।२९।।

-: दोहा :-

भैंसा गदहा ऊंट अहि, लोह कृष्ण तिल तेल।
ए देख्या पीडा घणी, मत जांणी हँस खेल।।१।।
हाथ पाँय छिद जायँगे, लगै खड्ग अरिशेल।
सत्य वचन शनिदेवको, मत ना पाछो पेल।।२।।
तेल लिप्त नर कृष्णको, भैंसे पर दरशाव।
मृत्यु तुल्य दुख देतहि, छिन्न भिन्न कर पाव।।३।।
फल भुगतावै शीघ्रही, केते विलम्ब करन्त।
द्वादश आयो राशिते, शनीदेव इह तन्त।।४।।
दान पुण्य व्रत होम कर, नितप्रति शनिको ध्यान।
जै चावै सुख जीवको, कह्यो हमारो मान।।५।।

-: छन्द-छप्पय :-

ग्रह ऐसे बलवान रंक राजा कर देतां।
राई पर्वतमान अग्रणी होय पछेतां।।
ग्रह वधावै विडद करै पुरुषारथ जेता।
ग्रह अधीन जय हार उधारे वंश समेता।।
खोटा ग्रह लाग्या दशा जप तप दान करंत सुख।
पंडित रामप्रताप कह नातर जान दुरंत दुख।।१।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरवासी हरितवाल गौडब्राह्मणव्राजलालीय
पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां द्वितीयोऽध्यायः।।२।।

*****

**विक्रमादित्य वचन :-**

शनि दीनो दुख काहुकूं, पहला मोय बताय।
कथा सुनन शनिदेवकी, रह्यो चित्त हुलसाय।।१।।

**पंडिता ऊचुः :-**

कंपत हैं धन नाशते, दशरथसे अवधेश।
चौथो आयो राशिते, सूरज पुत्र शनेश।।२।।
सातपुरी सरनाम हैं, अवधपुरी निजधाम।
सरयूं गंगा निर्मली, संतनको विश्राम।।३।।

-: छप्पय :-

सप्तपुरी सरनाम ताहिके आदि बखानी।
रघुवंशी विख्यात राज दशरथ रजधानी।।
घर घर मंगलचार सार सबके मनमानी।
करैं संत जन सेव रात दिन मुक्त निसानी।।
सूरज आगे तारिका भाशत हैं ज्यूं चिरमली।
ठौर ठौर सरितान जिम सरयू गंगा निर्मली।।१।।

-: कुंडलिया :-

नौबतखाना बाजता यज्ञ दान नित होय।
जापर जनमें रामजी राजा दशरथ सोय।
राजा दशरथ सोय कौशल्या उनकी रानी।
सौमित्रा शुभ शील कैकेयी हैं कुवधानी।
वेद घोष सतसंग गावते हैं सुरताना।
यज्ञ दान नित होय बाजता नौबतखाना।।१।।

-: चौपाई :-

एक समय मुनि ऋषि जुर आए। सभा मांय भूपाल बुलाए।।
ज्ञान ध्यानकी रीत जनाए। राजनका इतिहास सुनाए।।१।।
ज्योतिषकी बाता चलताही। इक पंडित बोले उनमाहिं।।
शनी देव कृतिका तिम आये। रोहिणी पर जानैका दाये।।२।।
प्रजाहेत कछु करो उपाए। बारा बरसां काल बताए।।
दशरथ सुनहु ए वाचा वोची। सात द्वीप पति दिलमें शोची।।३।।
कौन उपाय प्रजासुख होवै। मोशिर पाप दुनी न चढोवै।।
मिल मंत्रिनसे कस्या विचारा। दारुण समय देख भयकारा।।४।।
किम करिए व्याकुल जग सारा। किन विधि इनका होय सुखारा।।
गुरु वशिष्ठजी को शिर नावत। पूछत कारण बात चलावत।।५।।
हाथ जोड पूछत है भेवा। शनी नाम कैसा है देवा।।
कहौ विचारि करौ मत देरी। सुख पावै ज्यों दुनिया मेरी।।६।।
गुरु सुधीर बोले मृदु वानी। सुनो चित्तदे निगम कहानी।।
जे शनि रुक्ष रोहिणी वेधै। सबपर जानै बहुत निषेधै।।७।।
क्रूर महाग्रह है अभिमानी। शनी दृष्टि तिहुँ लोक दहानी।।
बड़ा असाध्य योग है एही। जतन करो पहलीते तेही।।८।।
राजनीति राजा नहिं चालै। लूटें खोस दुनियां दिन पालै।।
नरक निवास होय उसजीका। पाप कलंक चढै शिरटीका।।९।।

वेद पंथ बांधै मर्यादा। सहज सहज कर लेकर वादा ।।
सही रीत जो पापहि दादा। शील संतोष भेष है सादा ।।१०।।
दुश्मन कै हिवरै में शालै। धर्म करै परजानै पालै ।।
ते राजा सुरपुरको जावै। हरिभक्ती वैकुण्ठ पठावै ।।११।।

-: दोहा :-

करी तयारी युद्धकी, शस्त्र अस्त्र करधार।
शनिको मारग रोकस्यूं, हो मनमें हुशियार ।।१।।
कवच पहिर सज दिव्य रथ, गुरुचरणन शिरनाय।
जै जै दीनी आशिषा, ऋषि मुनि सहज सुभाय ।।२।।

-: सोरठा :-

धनुषबाण लै हाथ, गगन चढ्यो नृप योगबल।
कोउ न दूजो साथ, तारागणके बीचमें ।।३।।
योजन लक्ष कहात, शकटचक्र रवि ऊपारा।
ठाडो होय रहात, दे रोहिणिको पीठमें ।।४।।
हंसवर्ण तुरि योग, ध्वजा पताका फरहरै।
धरै पाव दे ठोग, रतनखचित मणि हेमरथ ।।५।।
कुंडल मुकुट प्रकाश, झलकत भुजपर कंकणा।
दूजा रवी आकाश, बाण चढावै मन्त्रपर ।।६।।

-: दोहा :-

धनुष तांणियो कान सम, संहारास्त्र चढाय।
युद्ध करन ठाडो थयो, अपनो तेज बढाय ।।७।।
देख शनि बोले तहां, तुम क्यूं मग रोकंत।
मैं जाता हूं मोजसे, रोहिणि भेद करन्त ।।८।।
राजा दशरथ यूं कही, जान न देऊं तोय।
क्रुद्धतान भ्रुकुटी विकट, मुख कराल क्यूं होय ।।९।।
पुरुषारथ दशरथ तणां, प्रबल तेज सुनिहार।
है अवतारी ब्रह्म शिव, विष्णु तणै उनियार ।।१०।।
देवासुर भय कारिता, कंपमान तिहुँ लोक।
संहारास्त्र प्रभावसे, करी युद्धकी फोक ।।११।।

-: छन्द- पद्धरी :-

किमु भं करन्त मनमें रिसाल। तब सुप्रसन्न पौरुष विसाल ।।
वर मांग मांग रण रंग धीर। चित चाहत जो रघुवंश वीर ।।१।।
तव हाथ जोड नृप याचताह। तुम रोहिणि भेदन मती जाह ।।
यावत नदि सागर चन्द्र सूर। हम पर मति दृष्टी रखो क्रूर ।।२।।

एवमस्तु शनिजी कहंत। तव राजा भी निर्भय रहंत।।
कृत्य कृत्य होय तज धनुषवाण। दुर्भिक्ष नाश इह कीर्ति जाण।।३।।
हुए हृष्ट रोम कर जोर दोय। स्तुति भाषत नृप सुनो सोय।।
शारद गणनायक सिद्धि कंद। गुरुके पादांबुज पुनर्वंद।।४।।

दशरथ उवाच :- -: छंद-प्र० :-

नमो नमो कृष्णरूप नीलवर्ण जानिये।
नमो नमो श्यामरूप नीलकंठ ठानिये।
नमो नमो पुरुष गात्र स्थूल राम सानिये।।१।।
नमो नमो नीलमणि नीलकंज मानिये।
नमो नमो क्षुधा पीड नित्य तृप्त तानिये।
नमो नमो कालरूप अग्निसम भानिये।।२।।
नमो नमो घोरूप भीषणं पचानिये।
नमो नमो रौद्ररूप काल भी मिटानिये।
नमो नमो करालरूप सर्व भक्ष्य खानिये।।३।।
नमो नमो वक्रतुंड सूर्यजं पछानिये।
नमो नमो काश्यपाय मंदचार गानिये।
नमो नमो दग्ध देह तापसी विकानिये।।४।।
नमो नमो ज्ञान नेत्र योग रक्त लांनिये।
नमो नमो क्रूररूप शुद्ध बुद्धि धानिये।
नमो नमो तैल लिप्त छाय सूप्र आनिये।
भणै कवी रामतेज प्रणती कहानिये।।५।।

-: दोहा :-

तुमरी महिमा है बड़ी, वर्णन कूं प्रभुकूंन।
शरणागत प्रतिपाल कर, हूं बैठ्यो धर मूंन।।१।।
राव रंक तुम करत हो, जंगल देश वसाय।
भस्म करो दृग वह्निते, सुरग पताल रसाल।।२।।

-: चौपाई :-

तुष्ट होय राजा कर देइ। रुष्ट होय पाछो हरलेइ।।
दृष्टि पड़ा तुमरी सब कंपै। सुर नर नाग शेषफण चंपै।।१।।
देश ग्राम नगरी द्रुम दीपा। भस्म होय रहता नहिं छीपा।।
स्थान भ्रष्ट होंगे जे राजा। जिन सबकी तुम राखी लाजा।।२।।
नल राजाको राज जमायो। हरिश्चंद्रको बिडद बध्यायो।।
पंचम नल सुत त्रिया वियोगा। साढसती हर चंदको रोगा।।३।।

अब पीछे करियो मत पीडा। दूर करो दुनियाँ दुख कीडा।।
या स्तोतर कूं पढै पढावै। ते शनि दुःख कदे नहिं पावै।।४।।

-: छप्पय :-

भस्मासुर इक दैत्य भेद नारदसे लेवै।
ब्रह्मा विष्णु महेश तुरत वरकूं नहि देवै।।
बाणासुर दशशीश जोग पडगो है टेवै।
तुष्ट रुष्ट छिन मांय जान सब शिवने सेवै।।
शकुनी पूत कपूत है जिन जिनके शिरकर धरूं।
तुरत भस्म हो ज्याय सुहियोहिवर हर मैं बरूं।।१।।
एवमस्तु शिव कह्यो गौरि हरणैके कारण।
चल्यो शीशपर हाथ धरण शंकरकूं मारण।।
डरपत भागे नाथ भक्तके कारज सारण।
अघ पापनि खा ज्याय चले हरि विपति विडारण।।
विप्र देव निन्दा करत खोटे दिनकी बात है।
शिवजीसे विलषत फिरे, ग्रह विन होतन घात है।।२।।

पंडिता ऊचुः :-

ग्रहहि करावै कर्म कर्म नहिं होता आवै।
वन वन भटक्यो राम विपतगेरी है जापै।।
दशरथ जूको मरण हरण सीता सी राणी।
रावणकी भई राख लंकजर धूलरधानी।।
मार्ग सनातन मेटता, कदे न होवैगा भलो।
पंडित रामप्रताप कह ऊजाड जानत मत चलो।।१।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय
पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां तृतीयोऽध्यायः।।३।।

*****

पंडिता ऊचुः :-

अष्टम शनी सुदासकूं, दीनां बहुता दुःख।
फिर सुदृष्टि राजा बन्यो, लह्यो घणेरो सुख।।१।।

-: चौपाई :-

श्रीभागवत पुराण कथाहि। नारदीय में लिखी यथाहि।।
एक समय बन गयो सुदासा। मृग मारनकी बड़ी हुलासा।।१।।
फिरत फिरत वन लगी पियासा। रेवा जलपी कियो निवासा।।
प्रात समय देखा मृग काला। पुनि शिकार खेलनको चाला।।२।।

केइ अवसर केइ संगपाला। बहुत उलंघे नदी र नाला ।।
मृग मारग तज अचरज पेख्यो। व्याघ्र युग्म गिरिकंदर देख्यो ।।३।।
सुरत करंत व्याघ्रको जोडो। मास्यो बाण दुडाकर घोड़ो ।।
व्याघ्री हता बाघ डर भाग्यो। राक्षस रूप दीखने लाग्यो ।।४।।
प्रतिक्रिया करनेकूं पाछो। वन्यो भूप घर निशिचर आछो ।।
राजा अपने पुरमें आकर। अश्वमेध आरंभ्यो न्हाकर ।।५।।
यज्ञ समाप्त न्हान गुरु गइयो। राक्षस रूप वशिष्ठहि भइयो ।।
मांस ल्याव भोजनकी वेला। ढील न करी हमारे चेला ।।६।।
स्नान ध्यान कर गुरुजी आया। चरण धोय जीमण बैठाया ।।
पलट रूप करता है बातल। शूद्र मांस पुरस्यो नर पातल ।।७।।
राजा गुरुका वचन कबूल्या। मांस भषोन्यूं कहता भूल्या ।।
देख अभक्ष्य कोप गुरु भाषी। यो भोजन चेला तुहि चाषी ।।८।।
नरको मांस दियो तैजक्षस। तिहिं कारण हो ज्याई राक्षस ।।
राक्षसकी लख लई उपादी। बारा वरसकी कीनी म्यादी ।।९।।
सुन सुदास मन मांही रूठो। गुरुकूं शाप देनकूं पूठो ।।
बिन अपराध सतायो मोकूं। राक्षसही कर देस्यूं तोकूं ।।१०।।
मंत्रोजल वरज्यो जब रानी। अपने चरण मारियो पानी ।।
जीव जंतु देखतही सारै। जांण पस्यां किसने कुण मारै ।।११।।
काला पांव ताहितै भइयो। राक्षस रूप भूप वन रइयो ।।
भूखां मरतो फिरतो ताहि। दंपति विप्र देख वन मांहि ।।१२।।
पकर लियो ब्राह्मणनै निशिचर। हा हा करत ब्राह्मणी रिसकर ।।
पतिव्रता हूं मो पति दीजे। गो ब्राह्मण वध कबू न कीजे ।।१३।।
पुत्र हेत दीजे पति राजन्। तुम सुदास मत करी अकाजन ।।
धर्म तेज तै मोकूं दीख्या। मदयन्ती पती मांनो सीख्या ।।१४।।
राक्षस जूंण समझ नहिं काइ। क्षुधित होय ब्राह्मणने खाई ।।
हा हा करत कामिनी रोइ। मै अनाथ वनमें नहिं कोइ ।।१५।।
काम दुःख ज्यूं तो तन जरसी। तिरिया संग किया तू मरसी ।।
दे शराब पतिके संग जरगी। संतति हीन राजनै करगी ।।१६।।
बारा बरष भ्रमत वनवीते। दुख भुगत्या कर मनसै कीते ।।
गर्ग दरश गंगाजल छूयो। राक्षस तुल्य तज भूपति हूयो ।।१७।।
उदासीन हुय बैठ्यो घरपै। संग न करै मौतसे डरपै ।।
गुरु वसिष्ठजी वंश चलायो। मदयंती सुत अश्म कहायो ।।१८।।
शनी देव यूं पीडा दीनी। पीछी बिगड़ी सुधार लीनी ।।
तुम विक्रम पूजो शनि देवा। प्रेम नेम से नितकर सेवा ।।१९।।

हरिश्चंद्रको राज्य बिगाऱ्यो। साडसती फिर काम सुधाऱ्यो ।।
सतवादी सत नाहीं हाऱ्यो। कर्म लिख्यो टऱ्यो नहिं टाऱ्यो ।।२०।।

-: छन्द-छप्पय :-

शनी तणो परभाव सुनत डरपै जग सारो।
चौथो अष्टम बुरो साढसति काम बिगारो।।
ध्यान धऱ्यां दुख नाहि देखल्यो कियो सुधारो।
फल देने मैं जूद कोड बिध टरै न टारो।।
अष्टम शनी प्रभावसों सौदासो निशिचर भयो।
पुनि सुदृष्टि परभावते अवधपुरी राजा थयो।।१।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय
पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

*****

-: सोरठा :-

हरिश्चंद्रकी सब कथा, मार्कंडेय पुराणमें।
वेदव्यास भाषी यथा, विस्तर भय लिखता नहीं ।।१।।
आदू चलै विरोध, विश्वामित्र वसिष्ठको।
विरला पावै सोध, जिहि कारण छल बल कियो ।।२।।

-: चौपाई :-

राजा हरचंद हो सतवादी। अवधपुरी उसकी है गादी ।।
राजसूय जिन यज्ञहि कीनो। पुण्य हेत सर्वसु उन दीनो ।।१।।
लोक चतुर्दशमें यश वाको। निजप्रति तेज बढत है जाको ।।२।।
देख न सक्यो भूपकी भलकी। विश्वामित्र विचारी छलकी ।।
सुंदर बाग सदा फल जामें। बागवान रहता है तामें ।।३।।
विश्वामित्र शूर वन आता। वृक्ष विनाश करत फल खाता ।।
रखवारेने दई रपोटा। शूकर हील गयो इक खोटा ।।४।।
सुनकर नृप मनमें दुख पायो। चतुरंगी सेना ले ध्यायो ।।
वोही किली बागमें आयो। चौतरफी जा घेर लगायो ।।५।।
राजा कही जान नहिं पावै। नित नित नूतन यो फल खावै ।।
सब नेही अहडा ललकारूं। जिस आगे जाय तिसने मारूं ।।६।।
झट वराह भूपति पर आवै। औरनको क्यों वृथा मरावै ।।
निकसी गयो नरपति आगे कर। नहीं शस्त्र लाग्यो तन वनचर ।।७।।
राजा अश्व दियो है लारी। खिंड भिंड होगी असवारी ।।
हो अदर्श मुनि अचरज कारी। बन्यो विप्र सँग सुता कुंवारी ।।८।।

भूपति भूख लगी तिस भारी। व्याकुल पहुँचो नदी ढिगारी ।।
जल पीयो लीनो विश्रामा। शीश धुनाय कहत हा रामा ।।९।।
निकट जाय ब्राह्मणसों भाषै। तुम ईश्वर हमरी पति राखै ।।
बढी हुई या कन्या मेरी। व्याहकरनकी कछु न देरी ।।१०।।
धर्मरीत कन्या परणावै। ब्रह्मलोक की पदवी पावै ।।
तुम करसे कन्या परणीजै। कुल सारूदा पदवी दीजै ।।
दे जल कर संकल्प करायो। राजा फिर अपने घर आयो ।।११।।
विप्र कहै धन देवो राजा। ज्यों वन आवै मंगल काजा ।।
राजा कहै कितो धन चावै। भूषण वसन कहा मनभावै ।।
साठ भारको नाम सुनावै। बहुत अन कथी बात बनावै ।।१२।।
सुन नरेश मनमें घबरावै। धन बिन कछू नहीं वन आवै ।।
हाथ जोड द्विज शीश नवाऊं। खुशी रहो सब कमा बनाऊं ।।
रानी सुत संग लेकर आऊं। चलो कहां जाहीं धन पाऊं ।।१३।।
ले मुनि चले करण कूं विकरी। दुनियांमें माच्यो है जिकरी ।।
सूर्य चंद्रकूं दरश दुहेलो। सो पृथिवीपति होगो गेलो ।।१४।।
कोउ कहै ए करता खेलो। यह विध मा चरयो है हेलो ।।
कव भूखी कबहूं रही प्यासी। रानीके दिल बड़ी उदासी ।।१५।।
चलत थकत मगतनकूं तासी। जा पहुँचे है नगरी काशी ।।
देखन कूं दुनियां सब आई। धूम धाम बहुत दरशाई ।।१६।।
काके ए दोउ लोग लुगाई। देख देख परजा मुसीकाई ।।
हुई दुर्दशा कही न जाई। बेचन घर घर दांतहिराई ।।१७।।
धन यौवनका गरब न करणा। आखर इक दिन सबको मरणा ।।
ब्राह्मण धनी किया है ठेका। इकराणी सुत संगहि एका ।।१८।।
कंचन दियो भार चालीसा। ले गो विप्र न कीनी रीसा ।।
कंचनभार मिल्यो है बीसा। दास नो चको भयो अधीसा ।।१९।।
जात पांतका झूठा कीशा। वोड़ बड़ो जाकै कर पीसा ।।
दुख पायो ऋण रख्यो न माथै। निशि श्मशान कोई नहि साथै ।।२०।।
देणो कर कोई नट जावै। नरक दुःख वाकूं भुगतावै ।।
संकल्पित धन रखो न कोई। पर्वकालमें दूणो होई ।।२१।।
दान दियो रखणो नहिं माथो। बधत बधत बंध जावै भाथो ।।
लेकर दान गयो ऋषि आगे। ज्ञान ध्यान तप घट गयो सागे ।।२२।।
प्रति ग्रहै हाता दुखदाई। धर्मशास्त्रमें ऐसी गाई ।।
तुरत दानको महा पुण्यरी। दान विना धन जान शून्यरी ।।२३।।

-: दोहा :-

नीच घरां पानी भरै, हरिचंदसे नरराय।
दासी रानी विप्रकी, प्रभुगति लखी न जाय।।१।।

-: सोरठा :-

एचेटक शनिदेव, साढसातीमें रचदिया।
मूरख लखै न भेव, सूखवदन तन पिंजरा।।२।।
ले ज्वावै भूदेव, चणो चवीणो याचकर।
स्वामी तणी जुसेव, तन मन स्यूं करता रहै।।३।।

-: दोहा :-

धन दीनो सतना डिग्यो, नितकी राखी ख्यार।
सुख दुख भुगत्यी हासरे, हरचंद हरसे प्यार।।४।।
मुराथलीचां डालकै, रही इजारू थाय।
पांच रूपया कापडा, लेकर दाह कराय।।५।।

-: छंद-हाकल :-

इकदिन रानी भूलीहारी, करती स्नान मंगलचार।।
झटपट चढी चील आकास, तारातुल्य मानुष प्रकाश।।१।।
जिसकी नाहीं काहु जास, चेतर सोच चित्त उदास।।
कीनो नगर मांही शोर, कोउ हार लेगो चोर।।२।।
ठाढे गली गलीमें दूत, लेकर कहां जासी पूत।।
राजा त्रास दीनी धनी, डरपै सबी कैसी बनी।।३।।
तारा गयी गंगास्नान, लखता नहीं मर्म अजान।।
देखत मांस समतागीध, चाल्यो चीलहूकी सीध।।४।।
दीनी झपट छूड्यो हार, गिरीयो जाह्नवी मँजधार।।
बहतो देख जल गहर्‍यो. ताराकंठमें पहर्‍यो।।५।।
जल भर कलश आती घरे, हेरा फिरत देखी परे।।
ले गये पकर जोराजोर, कोऊ नहीं उसकी ओर।।६।।
खोस्यो हार हुकुम हजूर, धडसे शीश करद्यो दूर।।
मारन चाहता नहिं कोय, देखत तेज अलघा होय।।७।।
काहू कही बात अजांण, सेवै पुरुष एक मसाण।।
सोयो करै काम कल्याण, ल्याये घेर नृपकै ठांण।।८।।
मैं नहिं करूं ऐसा काम, देस्यूं व्याज सूदादाम।।
लीना चार दिन विश्राम, शिरपर रखो क्यूं नीराम।।९।।
ऐसा कह्या वचन अनूप, सुनकर तखत रहगो भूप।।
है कोइ एह उत्तम जात, ऐसे करत दुनियां बात।।१०।।

कहकर इती घर आयो, भूपति बहुत पछतायो।।
सप्तम बरस उतरायो, अचानक सर्प सुतखायो।।११।।
कोनहिं पासमें आवै, देखत दूर भग ज्यावै।।
मानहि मातको जायो, बतायो देश दुसरायो।।१२।।
तारा बहुत बिखलाती, रोवत कुंड कुरलाती।।
अकेली मारकै गाती, चली शमशान हूं राती।।१३।।
करने दाहकूं लागी, पिछानी कंथने सागी।।
कर बिन जलन देउ नाय, सुरफर करे माउमाय।।१४।।
नहीं धन पास बरतनकूं, नहीं कछु दाम खर्चनकूं।।
आखर पुत्र है तेरा, वचन तू मानले मेरा।।१५।।
रानी कर रही विनती, राजा करत नहिं गिनती।।
सुन सुन उनांकी बतियां, फटने लग गई छतियां।।१६।।
रखूं जे मोहका नाता, हमारा धर्म घट जाता।।
पराया काम है ओखा, सुतका कुछ नहीं धोखा।।
हरीकी इसीही मरजी, परै होनी त्रियावरजी।।१७।।
अंचरो लियो आप उतार, इतनै हुयो जै जै कार।।
दुखकी रात कल्प समान, लाजकूं रख लई भगवान।।१८।।
आए ब्रह्म शंकर हरी, पीडा दुःख दूर करी।।
जीयो मोत टाल अकाल, मिटगा सबी आल जंजाल।।१९।।
दईं सुख संपदा पुष्कल, कछू नहिं रखी है मुश्कल।।
खुशीसे कर्ज मिटवायो, रख्यो नहिं रती भर दावो।।२०।।
भुगती धर्मकै हितकाठ, सोनो दियो भारहि साठ।।
तोल्यो कोडी धनकी हाट, आनंद हो गया है ठाट।।२१।।
त्रिया सुत संगजू लीना, अयोध्या गमन फिर कीना।।
गावत गीत अप्सर नार, सुर संगीत बहुत सुप्यार।।२२।।
चारण सिद्ध स्तुति करै, किन्नर यक्ष पायां परै।।
ऋषि मुनि भणत है गुण जोय, इसका भूप थोडा होय।।२३।।
घर घर खूब रंगलाग्या, सूत्या भाग अब जाग्या।।
आनंद हिये नाहिं सभात, हरचंदकी रसीली बात।।२४।।
हरचंदकी कथा यूं कही, मानू गुणी सबही सही।।
सुनता पाप कट ज्यावै, वांछित कामना पावै।।२५।।

**-: छन्द-छप्पय :-**

पाप वधै दिन चार अंतमहि होवत फीको।
करत दुष्ट उन्माद लेत स्याहीको टीको।।

बिगड न पावै कोय धर्म फल आखरनीको।
काशिवास सतसंग दया भलपण है जीको।।
जन्मसणो फल एह है, दुखमें मत घबराव नर।
हरि कीर्त्तन हरिकथा, सुन सुन कालवदीत कर।।१।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां पञ्चमोऽध्यायः।।५।।

*****

-: दोहा :-

विक्रम पूछै नल कथा, किह विध पड्यो वियोग।
दमयंती नलराजको, किणतक पुनि संयोग।।१।।

-: सोरठा :-

बिकसरह्यो मुखचंद, घणीलालसा लगरही।
कालिदासका छंद, सावधान होकर सुनो।।२।।
भारतमें विस्तार, नल राजाकी है कथा।
हो ज्यावै निस्तार, पाप मिटै संकट कटै।।३।।

विक्रम वाक्य :- -: चौपाई :-

किण विध नलको राज गमायो। किण विध पूठो ठाट जमायो।।
एह कथा हम सुन सुन जीवा। तुम मुखचंद अमीरस पीवा।।१।।

पंडित कालिदास वाक्य :-

सुणियो और एक इतिहासा। नलराजाकी महिमा खासा।।
निषध देशको है राजा नल। तेजवंत मणि शीश महाबल।।२।।
भीमराज पुत्री दमयंती। त्रिया नहीं दूजी प्रदि संती।।
दमयंती पालन गुण गावै। नलपै उहि तारीफ सुणावै।।३।।
सुन सुन उपज्यो प्रेम परस्पर। कब निरखूंगी वरका लसकर।।
एक दिना नल पल पकऱ्यो हंसा। मत मारो हम करै प्रशंसा।।४।।
दमयंती से मेल मिलावै। समाचार पीछो भगतावै।।
देख तमाशा अबही जावै। तुरत व्याहकी बात जचावै।।५।।
उड हंसा कुनणां पर आये। दमयंती की नजर पराये।।
पकरनकूं दासी गण धाए। प्रमदा वनमें सेठ लगाए।।६।।
बोलै हंस मनुषकी भाषा। नलका गुण गाया है खासा।।
ब्याह करो वेगी तुरताई। भर यौवनकी है रुसनाई।।७।।
जन्म सफल होवेगा तेरा। नलसा पुरुष चंदसां चेरा।।
गुणवंती नै मिलज्या गूणी। तबही सोभा सजती दूणी।।८।।

चातुर मूढ मिलेसै पूणी। यूं भाषत है सुबुधी सूंणी ।।
दीखत जगमां ही थोडी। कर्मयोग मिलती है जोडी ।।
सुन दमयंती मना विचारी। मैं तो होस्यूं नलकी नारी ।।९।।
किस्मत में लिखदी करतारी। नल राजा मेरा भरतारी ।।
हंसआय नलने कहदीनी। दमयंती कन्यारंग भीनी ।।१०।।

-: कवित्त :-

भई विकल वनमें विरह उठी तनमें चपला ज्यूं घनमें चिमकत चिमकाती है।
देखत सकी कानी भई क्या अयानी पिवत नाहिं पानी फूल फलहु न खाती है ।।
रानीसे जाय कहि दमयंती रूस रही विवाहनकी करो सही लिख लिखके पाती है।
तुरत उठ ध्याई कछु विलंब ना लगाई सैनन समझाई सोड़ नरपति पास आती है ।।१
बात लख सारी भूपसे गुदारी चंदसी उजारी विचारी क्यूं न बाती है।
भडक उठीवाई धान नाहिं खाई छिन छिन अकुलाई कछुना सुहाती है ।।
राजनकूं बुलावो स्वयंवर रचावो सुताजू परणावो सखियां कहलाती है।
जोबनको जोर तोर चितवन चित लियो चोर करियो मत सोर भोर वरवरण चाती है ।।२

-: दोहा :-

भूप बुलाए देशका, रचो स्वयंवर राज।
त्यारी करी विवाहकी, दमयंतीके काज ।।१।।

-: सोरठा :-

अपने कुलकी लाज, रंगभूमि वैठन करी।
सजदीनां सब साज, आयानै आदर घणा ।।२।।

-: सोरठा :-

भेद सुतको नृप लख पायो। इच्छा वर कन्या ठहरायो ।।
देश देशका भूप बुलाये। सुन सोभा इंद्रादिक आये ।।१।।
दमयंती व्याहनका चेटा। नल सेती मिलगी है सेटा ।।
रूप तेज गुण करते खेटा। राज अभूषण जरी लपेटा ।।२।।
मारगमें नलसे ठहराई। दूत हमारा तुम हो जाई ।।
दमयंती कूं कहो सुणाइ। जांचत तोय लखै नहि काइ ।।३।।
वही काम तेरे चित चाइ। कहकर हमैं नटो मत भाइ ।।
तुरत जाय नल पोच्यो महला। भांत भांतकी देखी सहला ।।४।।
दमयंती पूछत है ऐसे। त्रिया महल तू आयो कैसे ।।
कौन नाम तू है नर कैसा। हमसे मनमें बड़ा अनेसा ।।५।।
नल अपना जो नाम बताया। देवनकी किरपा से आया ।।
आपस में दोनूं बतलाया। सहज कामवन गा चितचाया ।।६।।

इंद्रादिक आए हैं प्यारी। तुम उनके घर लायकी नारी ।।
कही हकीकत सांची सारी। मस्त हुई है राजकुमारी ।।७।।
भल हाहीं इंद्रादिक आवो। हमरो तुमसे वणसी सावो ।।
ज्यूं आया ज्यूं यूठा जावो। तुम निसंक यूं जाय सुनावो ।।८।।
मत मनमें राखो पछतावो। निरभै गोविंदका गुण गावो ।।
ऐसी जुगत बनाऊंगी मैं। तुमहीसे चित लाऊँगी मैं ।।९।।
सांची आय कही देवनकूं। परम प्रीति प्यारी सेवनकूं ।।
मन इच्छा मेरी लेवनकी। कहो कौन मरजी देवनकी ।।१०।।
चलो स्वयंवर देखी जासी। सांच झूठकी करां तपासी ।।
रच्या रंग सब बैठे भूपा। एक एकसे अधिक स्वरूपा ।।११।।
इंद्र वह्नि समवर्त्ती वरुणा। नलसो रूप धर्‍यो कर करुणा ।।
रंग मांय दमयंती आवै। देखत भूप देव मुरझावै ।।१२।।

-: कवित्त :-

दामिनि दमकत ज्यूं चिमकातरयो गोरोगात, सखियनके झूले साथ आवत सुकुमारी है।
शीलगुण सवाई रूपराशी चलधाई सब, सभा मुरझाई कामना करारी है ।।
इंद्राणी ब्रह्माणी वरुणानी गंधर्वानी न सिद्धाणी अपसर उणियारी है।
मनमें हरषात सबी मंद मंद करत बात, वरमाला लियां हाथ कोन कलाधारी है ।।१।।

-: दोहा :-

दमयंती धोखो करे, पांचरूप इकसार।
नलराजा इन माहिं जो, सो मेरो भर्तार ।।१।।
सत छोड्यां पत जात है, कहा करूं करतार।
देवनकी स्तुति भणू, खेवो करियो पार ।।२।।
तुम मोटे हो देवता, मती विगारो धर्म।
बदनामी आछी नहीं, लाज रखोनी सर्म ।।३।।
नल राज सूचन करो, मेटो मनका भर्म।
हूं शरणै तुमके थई, करजो उत्तम कर्म ।।४।।

-: चौपाई :-

सतो धर्म राखो प्रभु मोरा। हों अधीन बहु करत निहोरा ।।
दमयंती नल नाहि पचानै। एक रूप पांच हि इक ठानै ।।
स्तुति करी सांचै दिलसेती। रूप दिखायो देव पछेती ।।१।।
वर दीना इंद्रादिक आठ हि। सब बातनका हो गया ठाठ हि ।।
व्यंजन रस यमराजहि देवै। जल अगनी आपहि कर लेवै ।।२।।
शक्र गती दरशन जग्यामैं। दमयंती पडती पग्यामैं ।।
जय जय धुनी लगी चोसारी। साधु साधु लीजे बलिहारी ।।३।।

मेरो मन नल माहिं वसंता। एवमस्तु कह दई हसंता।।
नलके गलपर माला डारी। धन्य धन्य करते नर नारी।।४।।
दमयंती व्याही नल राजा। मंगलीक बाजत सब बाजा।।
इणविध हुई व्याहकी लीला। वेदव्यासकी चाल्यो चीला।।५।।

### -: कुंडलिया :-

पुण्य श्लोकहि च्यार हैं, नलराजा अरुराम।
जनकसुता जु युधिष्ठिरा, नाशत दुरित तमाम।।
नाशत दुरित तमाम, पुण्यका है एथोका।
दिन दिन दूणा होय, घटत नहिं गठरी रोका।।
नाम समान न कोय, तिरणी जाणो नोका।
गावत वेद पुराण, चार हैं पुण्य श्लोका।।१।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरवासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां षष्ठोऽध्यायः।।६।।

*****

### -: दोहा :-

दमयंतीके व्याहकी, कही कथा संक्षेप।
पापी कलियुग लारलग, करता है विक्षेप।।१।।

### -: चौपाई :-

भूप गये अपने अपने घर। देव विमान वैठकर चलधर।।
द्वापर संग कली मघ भेटो। सुन या बात उपायो खेटो।।१।।
देवनको पद राख्यो हेठो। रानी व्याह हुयो है जेठो।।
देवनको नल है अपराधी। द्वापर तूं हमरी पषसाधी।।२।।
ता दिनसे कलि लाग्यो लारी। दाव पड्यासे करूं खुवारी।।
बारा बरस वदीतहि होया। मूत्र कियो कर पद नहिं धोया।।३।।
संध्या करत नींदमें सोया। कलियुग बीज पापका बोया।।
कलि प्रवेश इण रीत बतावै। नलकूं नाटक बहुत नचावै।।४।।
पासामें वड बैठ्यो द्वापर। कलि जूवो रच दीनो जाकर।।
राज करता था बहु राजी। दशा आय शनिजीकी लागी।।५।।
चोपडमें लग बैठ्यो बाजी। राज खोय होगो है पाजी।।
पुष्कर ले संपत सब साजी। नल सोचत कहा करूं इलाजी।।६।।
नांवल वेग डाकिए कूवा। भूल चूक कक्षर मण नहिं जूवा।।
बिगडी बात सुनी है नलकी। कलियुग काम किया है छलकी।।७।।
बार्ष्णेय नलकै घर सरीथ। पोंच्यो है करणे परमारथ।।
इंद्रसेन दोय बेटा बेटी। नानैकै घर गयो लपेटी।।८।।

रथ घोडा ह्यांही समलाया। आप नोकरी करणी चाया ।।
ऋतुपर्ण घर अयोध्या रहता। नलराजासे मिलनो चहता ।।९।।
पुष्कर लगै कवीलै भाई। ग्राम पती छो गादी पाई ।।
भूषण वसन लिया उतराई। नलराजासें करी बुराई ।।१०।।
राज छीन कीनो है बाहर। भई देशमें सगलै जाहर ।।
रख्या तीन दिन कांकड डेरा। कामदार आया नहिं नेरा ।।११।।
दुनियां है मतलब की गरजी। स्वारथ बिन कोई नहिं सरजी ।।
जल पीयो त्रिदिन उपवासी। पड्यो धरणि पै मारत सासी ।।१२।।
एक एक वस्तर ले दोऊ। चले गये तिथ बूझि न कोऊ ।।
सोच करैं दोनूं नर नारी। भूख प्यासकी लगरहि घारी ।।१३।।
कंद मूल फल मिल्यो न कीतर। दृष्टि पड्यो सोनैका तीतर ।।
भूख भगैगी तीतर खायां। दुःख मिटै कंचन धन पायां ।।१४।।
पकरन कूं जो कपडा डाऱ्या। लेकर उड्या रामका माऱ्या ।।
भूंद्या तीतर जो कहलाता। वैसारी मूरखकी बाता ।।१५।।

-: छंद-हाक्ल :-

तनपर नांय कपडा देख, विधिना लिख्या एही लेख ।।
रूठडां राम नहिं कोऊ, दमादम रं गया दोऊ ।।१।।
चहूँ दिश दृगनसे जोऊं, गयो धन याद कर रोऊं ।।
कर्मका काम है बंका, भूपती कर दिया है रंका ।।२।।
विलपत तेज तन खोता, पुकारें कछु नहीं होता ।।
मूढ मन धीर नहिं धरता, करणैहार है करता ।।३।।
प्रियाकूं सैन समझाता, ए रस्ता कुनण पर जाता ।।
रानी लखी तजसी मोय, ऐसी नहीं चैए तोय ।।४।।
चलना बाप घर मेरे, रती नहिं दुःख फिर तेरे ।।
नहीं घर सुसरका मोसर, बिना गज बाजि सजनोसर ।।५।।

-: दोहा :-

बिलखत देखरकंथनू, त्रिया बंधावै धीर ।।
हूं अर्धंग्या रावरी, ओढ्यो आधो चीर ।।१।।
रेसमको फाटै नहीं, दोनूं लपटे साथ ।।
निर्जन बन भय सिंहको, सघन गाछ गहहाथ ।।२।।
पंथ बतावै परिको, मीठी बात चलाय ।।
प्यारी पूछन भेदनूं, बातनमें पतराय ।।३।।
तिरिया भोरी दुःख घणा, किण बिध द्यूंस विहाय ।।
कहणीथी सो कहदई, सैनामें समझाय ।।४।।

नृप सूत्यां रानी जगै, छतियां धडको खाय ।।
जीव दव्यो नहिं रातनै, तिरिया तणै सुभाय ।।५।।
रानी सूती नृप जगै, कीनो मनमें ज्ञान ।।
नारीको निभणूं कठिन, दुख बहुते उद्यान ।।६।।
फिरत निहारै कुंजमें, कोश बिना तरवार ।।
अरध वसनकूं चीरके, आप हो गयो पार ।।७।।
रानी जागी नल विना, हा हा करत अचेत ।।
कौन चकमों मैं परी, प्राणपियारी देत ।।८।।
कहां न मंदरमालिया, नगर गांव कहँ खेत ।।
छोड़ी विषम उजारमें, भलो निबाह्यो हेत ।।९।।
अबला भटकत एकली, हिरण व्याध रखवार ।।
भषत भुजंग विना शकै, हुयो आप लगवार ।।१०।।
फलदीना विश्वासकर, पूछन लाग्यो बात ।।
दमयंतीपति देवता, पाप तुरत लखजात ।।११।।
नलसे दूजे पुरुषपर, मन चित नाहिं धरन्त ।।
वागवज्र इन शाप ते, पापी वेग भरंत ।।१२।।
मार व्याधको फिरत ही, देखा दुःख अनन्त ।।
मिलसी पतिसे तापसा, अन्तर्ध्यान कहंत ।।१३।।
चेदि राज सुत बाहुकै, देश सार्थ इक जात ।।
द्रव्य हेत तिरता नदी, भैमी मिली सँगात ।।१४।।
सौगंधिक सुत डाकजू नाम सर्वतोभद्र ।।
पश्चिम तट वासोथयो, मची रात नैगद्र ।।१५।।
सूत्याँ सोबत रातमध्वा, बन गज पहुंचे आय ।।
हस्ती सारथ वाहके, मिलकर रोल मचाय ।।१६।।
छिन्न भिन्न सागो कियो, जादूगारी नार ।।
निकटको नहिं आनदे, मारै लोष्ट प्रहार ।।१७।।
यक्ष पिशाची राक्षसी, है डाकण यह नार ।।
रानी ये दुख देखती, जीवनको धिक्कार ।।१८।।
राज्यदूती सतीकृति, पति सुत सुता वियोग ।।
कहँ पीहर घर मातको, जिया धरै नहिं ठोग ।।१९।।
ना हंसती मर्दन करी, हूं पापण निर्भाग ।।
विनाकाल मृत्यु नहीं, आप हि आई जाग ।।२०।।
ब्राह्मण जे हत शेष थे, तिन संग पहुँची देश ।।
बालक पीछे लग रहे, देख कुतूहल भेष ।।२१।।

राजमात महला चढी, पेखत धाय पठाय।।
दुखियारी शरणार्थिनी, मेरे महला ल्याय।।२२।।
बालक हटगे ले गई, धाय आपने संग।।
हिमलासे दे बअठणो, पूछत बात उमंग।।२३।।
कौण तुही बोली सही, हूं सैरध्री जात।।
मो समीप सुखसे रहौ, कह्यो राजकी मात।।२४।।
जूठो भोजन ना भखूं, पग धोनूं नहिं कोय।।
नर संभाषण ना करूं, करै सुदंडी होय।।२५।।
रही सुनंदा पासमें, मोस्या ही सुत जाण।।
ब्राह्मण नाम सुदेवजू, आयर करी पिछाण।।२६।।

-: सोरठा :-

कियो मांवसीहेज, सुता जान कर भैंणकी।।
दियो घनेरो देज, भली युगत पितृघर गई।।१।।
वहता विषम उजार, नल देख्यो वनदाझतो।।
सुन्यो शब्द निरधार, नल परि धावसु पुण्ययश।।२।।
देख्यो कुंडलि नाग. नाग माभैंर्नल जा अगिनिमें।।
हाथ जोड पग लाग, कर्कोटक मोय जानिये।।३।।
नारद तणो शराप, परलंभन हमने कियो।।
स्थावर होय दराफ, यावत् नल आवे नहीं।।४।।
नृप तोकूं ले ज्याय, तबहीं छूटै शापस्यूं।।
जीवदान देच्याय, गुण भूलूं नहिं हो सखा।।५।।

-: दोहा :-

नल छूयां छोटो हुयो, चढ अकाशवो लेह।।
गिणकर चालो पग किती, श्रेय करूं ज्यूं तेह।।१।।
गिणतां देशमें पैडमें, डस्यो नाग विपरीत।।
रूप पलटगौ तासमैं, वैरी विष भयभीत।।२।।
ज्वालाते जलतो रहै, विकृत कऱ्यो इन काज।।
भोग विषो थोरे दिना, शुभ होसी महाराज।।३।।
वस्त्र दियो निज रूपकूं, बाहुक नाम धराय।।
दशमैं दिन ऋतुपर्ण, वाहन काम कराय।।४।।
नलराजा बाहुक बन्यो, नाग हुवो परधान।।
रहता है घुड़शालमें, बडी भूपकै मान।।५।।
वाला विलखत बापगृह, दियो मात मिल भेज।।
ब्राह्मणकूं नल सोधनै, कछू न किनी जेज।।६।।

अर्धवस्त्र छेदन कियो, गयो कि तब तज वाम।।
इसको उत्तर कां मिलै, खोजो मुलुक तमाम।।७।।
देश मुलुक सब हेरिया, कितै न पाई जास।।
घिर आये पीछा सबी, ब्राह्मण होय उदास।।८।।
ऋतुपर्णपा जायकै, कही बात परणाद।।
बाहुक नामा सारथी, सुन पाई है लाद।।९।।
बनमें जायरयेकलै, दियो बातको ज्वाब।।
कुलवंती जो कामिनी, सब ऊगण ले दाव।।१०।।
वो अपने वश है नहीं, कर उगण बकसीस।।
दई मिलासी मेलकूं, निश्चय विश्वा वीस।।११।।
एती सुन पर्णाद मुख, मात सुता मिल दोय।।
नल कारण अचरज रच्यो, खबर नहीं है कोय।।१२।।
भेज्यो विप्र सुदेवकूं, पुनर स्वयंवर थाय।।
तडकै पहुँचे राजवी, सोई कंथजथाप।।१३।।
मन राजा ऋतुपर्णए, बाहुक लयो बुलाय।।
धारी मनस्या चलनकी, अपनो रथ जुडवाय।।१४।।
इंद्र सारथी मातली, शालिहोत्र नल राज।।
घोडारी गतिका सुण्या, तीनूंहुस्तमवाज।।१५।।

-: चौपाई :-

दुर्बलसा लयाला है घोडा। दो दो पगसै दीसे खोडा।।
पढकर मंत्र तुरंतहि जोडा। पवन वेग चढते ही दोडा।।१।।
वार्ष्णे यनैवी संग लीनो। मारगमें इक अचरज कीनो।।
पडता पडता वस्त्र बतायो। च्यार कोसपर जाय चितोया।।२।।
चमतकार देख्यो ऋतुपर्णा। अपना वीगुण लाग्यो वर्णा।।
दो शाखाके पत्र बताए। पांच कोड गिणकर दिखलाए।।३।।
सीख लई विद्याकी कूची। अश्व भेद बतलाई यूँची।।
विद्यासे विद्या आती है। गुप्त रख्या यूँही जाती है।।४।।
विद्या बलकलि बाहर आयो। रुंख बहेडै मांय समायो।।
शुद्ध होय कुनणां पर आए। आगे भूप एक नहिं पाये।।५।।
घन घनाट सुनकै दमयंती। हिणहिणाट चपला चिमकंती।।
जाय दिया बागन में डेरा। राजमहलसे अति ही नेरा।।६।।
नहीं भीड भडको राजनको। कियो मान आए साजनको।।
जल अगनी पिन वस्तु पुचाई। मंत्रासे सब सिद्ध बिधलाई।।७।।

कर व्यञ्जन पकवान मिठाई । आप जीम रणवास पठाई ।।
चाख चाख दमयन्ती खाई । नलराजाकी गत लख पाई ।।८।।
पुत्र सुतासे जाय मिलाई । निरखत ही छाती भर आई ।।
उचक लिए गोदी बैठाइ । मुख चुम्बत हि गरे लपटाइ ।।९।।
चोग चोग कर करी पकाई । छल बलकर महलांमें ल्याई ।।
नलमें था सारा गुण वैसा । रूप एक नाहीं है तैसा ।।१०।।
कारण भेद सवी बतलायो । नलराजा निज रूप दिखायो ।।
जितणै नहिं ऊठी थी चादर । तितणै त्रिया न दीनो आदर ।।११।।
क्यों रानी मन में पछतावै । लेख लिख्या सो कौन मिटावै ।।
घर घर मङ्गल बटी बधाई । कर उमङ्ग गारी बहु गाई ।।१२।।
ऋतूपर्ण मनमें सरमायो । विद्या अश्व तणी ले आयो ।।
नलकी गुण गाथा है वोरी । सूचन करी हमीने थोरी ।।१३।।
चौथे वरस मिली पिय प्यारी । शनि प्रसन्न मेटी सम धारी ।।
पञ्चम शनी देत फल खोटो । दुख पीडा विरही धन टो टो ।।१४।।
एक मास कूकड ला गाया । सुख संपत दुख सबी भुलाया ।।
ले लस्कर पुष्कर जा हेऱ्यो । सर्व राज परपासो गेऱ्यो ।।१५।।
नलराजा भोग्या दुख दुष्कर । उहि जीत्यो हाऱ्यो है पुष्कर ।।
गयो राज पूठो नल पायो । भो ब्राह्मण धन खूब खुवायो ।।१६।।
दान यज्ञ कर सुयश बधायो । पुण्य श्लोक नाम यूं पायो ।।
सुण दमयन्ती नल राजा जस । दुश्मन दफै शत्रु होता वस ।।१७।।
ऋतु-पर्ण कर्कोटक नागा । ए चारूं सुकृत का पागा ।।
यह कथा जो सुनै सुनावै । कलियुग दोष निकट नहिं आवै ।।१८।।
धन सन्तान बधै सुख भावै । हो विख्यात इन्द्रपद जावै ।।
नलराजाकी कही सुलीला । पण्डित रामप्रताप रंगीला ।।१९।।

### -: कुण्डलियां :-

ग्रह नव पूजत जगतमें, तिनको वरणू भेव।
क्रूर दृष्टि ध्यावै दुनी, शनी मोटो है देव।।
शनि मोटो है देव, ध्यान धरता सुखदाई।
संकट शत्रु विनाश करणमें कसर न काई।।
वेद नाग व्यय वित्त जन्म पञ्चमकू बूजै।
अपने सुखकै हेत, जगतमें ग्रह नव पूजै।।१।।

### -: छप्पय :-

रवि रावण दितिजेंदु भौम राघव बुध पांडव।
गुरु दुर्योधन शुक्र दैत्य हिरण्याक्ष उषांडव।।

शनि सुदास नल तमो केतु हरचन्द बिगाऱ्यो।
देवादिक दुर्दशा पाय फिर काम सुधाऱ्यो।।
तुष्ट होय जप दान तै ग्रहा राजकूं देत है।
रुष्ट हो अपमान ते तन मन धन हर लेत है।।२।।

विक्रम वाक्य :- –: छप्पय :–
करा किसाणी कार मांग कर मत नां खावो।
ठग फांसी मत रचो दुनीनै क्यूं भरमावो।।
भूल्यां पण्डित फिरो नव ग्रह नाम बतावो।
कर्मयोग सब होय वृथा क्यूं मोय सतावो।।
करणहार इक राम है और देव पूजूं नहीं।
दुख पावत नृप बोलियो पंडित बूजू नहीं।।३।।

पंडिता ऊचुः :- –: छप्पय :–
देह विना कछु नहीं जतनसे करिएरिष्या।
जीवणकी सब आस मांगकर खाते भिष्या।।
ग्रह विन और न कोय मानले हमरी शिष्या।
कर्म नहीं जड करै, करै हमहीं हरि लिष्या।।
सीज्यांतणी पिछांणइम चावल देष्यां एक कण।
ग्रह विनघात न भूपती, पण्डित रामप्रताप भण।।४।।

–: कुण्डलिया :–
एक न मानी साँचकर राजा विक्रम भान।
करे भक्ति भगवानकी, व्यासवचन परमान।।
व्यासवचन परमान औरकी झूठी बानी।
कहकर बैठे थाके साथ पण्डित सुरज्ञानी।।
नमें भूप उदास होंय देखत है कानी।
राजा विक्रमभान सांचकर एक न मानी।।५।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय
पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां सप्तमोऽध्यायः।।७।।

*****

–: सोरठा :–
वचन सुना विपरीत, पण्डित अपने घर गया।
विक्रम तणी अनीत, होनहारके कारणे।।१।।
भावी माडी जाण, प्रथम द्वेष भूदेवसे।
बडा न राखी कान, न्याव थपाय करै नहीं।।२।।

-: दोहा :-

जल नहिं छूयो विक्रमा, लघुसंकाकर भूल।
आई खोटी शनिदशा, मरण दुःख संतूल ।।१।।
सूत्यां सूरज उगत है, सूत्या ही छिप जाय।
लूटण पोषण कर रह्यो, पर जामे अन्याय ।।२।।
सन्ध्यादिक कबु विसर ज्या, स्नान शौच वृषमूल।
शनि सुपनेमें आ कही, रही यतन कर शूल ।।३।।
चित्तभरम तब हीं भयो, डोलत है डबकाय।।
तन धनकी सुध ना रहीं, बोलत है बहकाय ।।४।।
उत्तर देश पञ्जाबते, कारवान इक आय।।
उतरी पुरी उजीणमें, डेरा दिया लगाय ।।५।।
सुण तारीफी अश्वकी, विक्रम लियो बुलाय।।
पाणीपत आकाश गत, लीना तुरत बुलाय ।।६।।
कमर बांध राजा चढ्यो, फेरन आप तुरङ्ग।।
चाबुक लीनी हातमें, नाचत बहुत तुरङ्ग ।।७।।
कुण्डल मण्डल फेरता, मनमें घनो उमङ्ग।।
पवनवेग चढगो गगन, दूजो कोउ न संग ।।८।।
विषमघाट वन गहरा, देखत भूप मलीन।।
दुखमें दुख दूणो थयो, अश्व हो गयो लीन ।।९।।
राजा कछु ग्यामैं नहीं, विकल भई है बुद्ध।।
फिरै दिवानो बावरो, रति नई है शुद्ध ।।१०।।
भूखो प्यासो रोवतो, वन वन डोलै राय।।
फिर सुपने शनि बोलियो, अबहीं मोय चिताय ।।११।।

-: छन्द-पद्धरी :-

ऐतिह्य नाम करके प्रमाण, विक्रम तणा जु करहू बखान।
फल फूल खाय वनमें रहंत, गिरिगुफा माहिं निशिजा परंत ।।१।।
निज देश पंथ नाहीं मुरंत, सुध परी नाय भूपति तुरंत।
कहुँ चढत वृक्ष हेठै गिरंत, कहुँ विकल चित्त वनमें फिरंत ।।२।।
लीनी भ्रमंत चहुँ दिशा हेर, नहिं कहू ठौर दिनके जु फेर।
मुनिजनके आश्रम गो चराय, कहुँ कहुँ जु बीचमें सुख उपाय ।।३।।
इह भांति बीतगो बरस रोज, भूपति नहिं पायो रहे खोज।।
संपत के सीरी बहुत लोग, कोई नई संगी विपती भोग ।।४।।

-: चौपाई :-

बनी बनीका सब कोइ सीरी। बिगरीमें नाखत है खीरी ।।
ढांसी सै वण ज्यावै मीरी। खा ज्याणै सब गूद पंजीरी ।।१।।

भूप गये को करै न सोरा। उठ लागैगा चोर चकोरा।।
निर्भय काम करत है सारा। साँच झूठ नाहीं निरधारा।।२।।
जिस नर माहिं विषो पड ज्यावे। रूप शील गुण सब घट ज्यावै।।
खबर नहीं पडती राजाकी। बुरी विपत बाता लाजा की।।३।।
हेरा देश भूप नहिं पायो। मंत्री अपनो अमल जमायो।।
दर्द मर्मकी लखै न कोई। विपत पड्याको सगो न सोई।।४।।
भूषण वसन कछू तन जेई। तस्कर लूट ले गया केई।।
कछु खायो कछु खोय खिंडायो। घर घर फिरै नित्य डबकायो।।५।।
विषम उजार पंथ नहिं सूझै। तिसा मरत इक ग्वाल्यो बूजै।।
जल प्यायो अरु राह बतायो। ले मुदडो राजा फरमायो।।६।।
वीरसिंह राजा कै आयो। बरस डेढ थोरो सुख पायो।।
झूठो कन्या कलंक लगायो। भाग दौडकर जीव बचायो।।७।।
विजय केतु पश्चिम दिश गाजै। धारा नगर बसै सिरताजै।।
आय लियो विक्रम जांवासो। बरस एकमें माच्यो रासो।।८।।
वाघ सिंह बन गऊ विनासी। चढ्यो भूप सह करत खुवासी।।
सिंह हत्यो राजाने वनमें। मची हलहली सारे जनमें।।९।।
विक्रम सिंह व्याघ्र बहु मारे। भाज गए नृप मंत्री सारे।।
रानी खबर दई हलकारे। सेवक होकर गजब गुदारे।।१०।।
पकर कैदमें पटक्यो वानै। छोड्यो रानी धर्म पिछानै।।
सोवत नग्न वसै समसाना। खूल्या केश फिरत हु दिवाना।।
तर्जनि भस्म बालुका लूणा। दांतण करत दुःख होय दूणा।।११।।
फैल पषंड दंभ गह ठाडो। धर्म कर्म व्रत नेमहि छाडो।।
पाप करत आपद दुखखाडो। ले डूब्यो गोरल ज्यू हाडो।।१२।।

**-: दोहा :-**

कही न जावै दुःखकी, नित नित, नूतन बात।।
कहां पांव लागै नहीं, शनी करत है घात।।१।।
कदीक मन धीरज धरी, मधुबन थयो मुक्काम।।
गावत गीत सुकंठरस, वीरमोहनी नाम।।२।।

**-: छन्द-वीरमोहन :-**

इकतारी इक रखो राम पै निर्भय किससे मती डरै।
रेख कर्मकी टरै न टारी मूरख मन क्यूं सोच करै।।टेर।।
विधिने लिखा सोइ होता है घाट बाँधना ही तिलवा।
देश विदेश बिकट वन खंडा फिर आवो धिकनां मिलवा।।
देख पराई धन सुख संपत दुर्जन तन लागे जलवा।

चुगली चाला नहीं किसीका चुप कारो मत कर गलवा।
सोच किया अब कछू न बनदा मनवा धीरज क्यूं न धरै।।१।।
असुरनके संहारन कारण दशरथके घरमें जामा।
हा सीते हा सीते करते बन बनमें भटके रामा।।
राज्य विभीषण कपि सुग्रीवा भक्तनके सारै कामा।
रावण मार गरद कर डारे अवधपुरी आये धामा।
सुखदुखदाता एक न दूजा निर्भय हो क्यूं ना विचरै।।२।।
तीन दशा सूरजकी होती नित नित घटै बधै चंदा।
थिररहदा कछु दीखता नाहीं सब करते झूठा धंधा।।
व्यास वसिष्ठ पराशर गाधी भूल पडे माया फंदा।
ब्रह्मा शिव इंद्रादिक नारद कहा दोष दीजे वंदा।
धन जोवन सुपनेकी संपत नलराजामें बिपत परै।।३।।
किरड कांटको रूप बन्यो है नृग राजासे हीदानी।
नहुष जाय इंद्रासन बैठ्यो सरप हुयो कर कुबधानी।।
साठ हजार सगरके बेटा भस्म हुए हैं इक थानी।
दुर्वासा यदुवंश खपायो मूशलसे चलती कहानी।
हरिश्चंद्रसे भए भिखारी नीच घरांमैं नीर भरै।।४।।
अपनी कौन पुरुषमें गिनती विक्रम सोच करै मनमें।
राजपाट कहां ठाठ हमारे एकाकी घूमें बनमें।।
कोनहिं पूछत बात आनकै भूख प्यास व्यापत तनमें।
कहा करूं कैसी वन आवै बाज बगीचा कुंजनमें।
पंडित रामप्रताप कहत है रामभज्यां सब काम सरै।।५।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां अष्टमोऽध्यायः।।८।।

*****

### -: दोहा :-

खांणैका सीरीसबी, सुत बंधू परिवार।।
दुखका सीरीको नहीं, एक विना करतार।।१।।

### -: छन्द-पद्धरी :-

गुजरे इण भांती वरस च्यार, मुख बोलत ना कोऊ करत प्यार।।
कहुँ डूबत नदिया मंझधार, खेवटिया कीनो कर पगार।।१।।
कहुँ सिंह बाघ गज लेत घेर, कहुँ डसे सर्प चढती घुमेर।।
कहुँ धूप शीत सहारी न जाय, भीजत कहुँ वरषा थरहराय।।२।।

गिरिवर तरुवरके रहत पास, कहुँ सरवर ऊपर करत वास।।
इह भांत बीतगे पांच वर्ष, व्यापत तन मांहीं कहूंक हर्ष।।३।।
इक समैं जाय पहुँचे सुधाम, चंपापुर वाको भनत नाम।।
रतनापर है परयाय भेद, नृप नाम यूंहि मत मान खेद।।४।।
तां लक्ष्मीचंद नामी सेठ, ता के समीप पहुँचे ठेठ।।
उस नगर मांहि बहुतेह साह, धन लक्ष कोटि अर्बुद अथाह।।५।।
नृप शूरसेन उहि मनीराम, मनरंजनकूं धर दिया नाम।।
दानी बहु मानी शिरैं ताज, चातुर सुविचक्षण करै राज।।६।।
निपुणो नृप नीति षट् प्रकार, फल विन करता नहिं कछू कार।।
जां करै चितेरा चित्र काम, मंदिर सुंदर सबही तमाम।।७।।

-: दोहा :-

नगर तणी सोभा घणी, बँधी धर्मकी पाज।।
राजसभा अमरावती, मानूं इंद्र समाज।।१।।
बाग बगीचा बीचमें, फूल रही फुलवाद।।
पडकोटा ऊंचा घया, गोख झरोखा साद।।२।।
ऊचे महल अटरियां ऊंचा चहुँ दिश द्वार।।
चंदावदनी कामनी, गावै राग मलार।।३।।
रतन मणी हीरा पना, मोतियन जूमा थाय।।
कंचन महल हजूरके, सोभा अती सिवाय।।४।।
गुणियनका आदर घणा दान पुण्य सरसाय।।
सुंदर गावैं कामिनी, मंदिर हरि यश जाय।।५।।

-: छन्द-पद्धरी :-

धनपाल देख वहिको स्वरूप, मन मांय सोच किधु होय भूप।।
संकोच मान चित मांहिचात, तुम कहो आपनी पुरुष बात।।१।।
तुम कौन कहांके क्या मताह, आया किन कारण सो बताह।।
तब हाथ जोड माथो नताह, दुर्बल उवाच करते कताह।।२।।

भिक्षुरुवाच :-

-: छन्द-चौपदा :-

बातनसे भूप बनी बातनसे रूप धनी।
बातनसे मांन तांन होंत है गुलामकी।।
बातनसे दुःख हटै है बातनसे पंथ कटै।
बातनसे थाट थटै मिलत भू इनामकी।।
बातनसे काम सरै बातनसे विपत हरै।
बातनसे सोर टरै दुनियां तमामकी।।

पंडित कह रामप्रताप बातनसे मिटत पाप।
बिगर जाय बात तब जात कौन कामकी।।१।।

-: चौपाई :-

जात पांत नहीं कछु मेरी। घर घर भटकूं सांझ सवेरी।।
सब नगरीमें देतो फेरी। अबहूँ आयो शरणै तेरी।।१।।
मिलै मोहिं कोउ हरको प्यारो। मोसम नाही और दुखारो।।
बात पुराणीको कहुं ब्यानो। तो तुम मोकूं विचल्यो जानो।।२।।
गई बातको गई करावै। सुघर सूहि नाहीं गुदरावै।।
थोरी सी मैं समझो सारी। मोयबनी जीवनकी पारी।।३।।
श्रीपति भणत हर्ष मन माहीं। अन्न वस्त्रकी कमी जु नाहीं।।
खान पान चावै सोई लीजे। निशिदिन हमरी सेवा कीजे।।४।।
करत चाकरी टुकडा खाता। समैं समैं की देखो बाता।।
सैन माहिं लखता जो कहता। अपने मुरतब माफक रहता।।५।।
शकती जो लग दौड उडावै। इह प्रकार कर गौड गुडावै।।
धन मद मूरख करते सेखी। सदा एक रस किते न देखी।।६।।
अशन वसन वाको नित दीनो। द्वारपाल श्रीपति कर लीनो।।
मात वरीजां नर घर राख्यो। हँस हँस अमृत वचन सुभाख्यो।।७।।

-: दोहा :-

बरस दोय बीत्या जवी, सुख सेती तिहिं ठोर।
सुपनेमें शनिदेय फिर, दरश दियो है भोर।।१।।
अवहीं मोय चितार तूं क्यूं भुगते है काठ।
कर देऊं इक पलकमें, सबी बातका ठाठ।।२।।

राजा वाक्य :-

-: सोरठा :-

नहीं पूजने योग, देव पुजारी झूठ सब।
समझ रखो दिल ठोग, करणहार दूजो नहीं।।१।।

-: दोहा :-

तुम जावो घर आपने, क्यूं खाते हो कान।
भली बुरी प्रारब्धसे, करसी श्रीभगवान।।१।।

शनिवाक्य :-

तजदे मनका माठमूं, लख मेरो परभाव।
बेरबेरमें आयकै, तोय दियो दरशाप।।१।।
रही घणो कर जावती, अब नहिं लाऊं देर।
कुडो कलंक लगाय कै, तोय कराऊं जेर।।२।।
एती कह शनिजी गया, विक्रम धरता ध्यान।
झूठा सुपन जंजाल है, जानत हूं मनज्ञान।।३।।

पोढरयो टहि महलमें, मनमें है हुसियार।
साहसुता रूपवती, न्हान गई तिहि बार।।४।।
वाहर जावो तुम नरा, नारी तणो विचार।
स्नान करूं एकांत में, नहीं और परिचार।।५।।

-: छन्द कुण्डलिया :-

झूठी रचना और सब लखमाया पैसार।
गुरुमुख वेद विचारते भवसागरके पार।।१।।
भवसागरके पारवार माया है लुंठी।
साधन चार विनहि कबू नहिं पडसी भुंठी।।
निशिदिन ब्रह्म विचार मोह ममता कर पूठी।
सच्चा सांई एक और सब रचना झूठी।।२।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरवासी हरितवाल गौडब्राह्मणव्राजलालीय पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां नवमोऽध्यायः ।।९।।

*****

-: दोहा :-

भोरहिमें श्रीपतिसुता, भूषण बसन उतार।
महल माँय न्हावन लगी, कूंट्यां टांग्योहार।।१।।
मल मल माथो न्हाय कर, कीना सब श्रृंगार।
बनठनकै घरमें गई, विसर गई है हार।।२।।

-: चौपाई :-

न्हाय धोय घर अंदर आई। संग नहीं थी दूजी काई।।
वोई द्वारे खरो सिपाई। भूली हार नहीं सुद पाई।।१।।
कुंवरी हार चितारयो जबहिं। महल माहिं जा देख्यो तबहीं।।
खूंटी ऊपर हार न पायो। तब मनमें कछु सूबो आयो।।२।।
पूछत बात सुनों हो ठाकर। हार लियो है तुमने आकर।।
याद कियो मैं अबही जाकर। निमक हरामी मत हो खा कर।।३।।
और नहीं आयो इह ठोरी। हार लियो है तुमहीं चोरी।।
भिक्षुक है हमने नहिं लीनो। तुमहिं तुकारे घरमें चीनो।।४।।

-: दोहा :-

ना देखी कांना सुणी, होनहार की बात।
मोतियन गूंथी हार लड, चित्र मोर भख जात।।१।।
सुनत नाम चोरीतणो, भिक्षू शीश धुनात।
है मुसकल संकट बन्यो, शनी रच्यो है घात।।२।।

### -: चौपाई :-

हुई निराश सेठकी बेटी। श्वास मार दे चेली छेटी।।
बिकल होय माता पै आई। हार लियो इन खरै सिपाई।।१।।
सेठांणी सेठन गुदराई। पूछत श्रीपति कर चतुराई।।
बेटी हमरी घर पर ब्याई। रखो हार मत देद्यो भाई।।२।।
हमरी सुता तुमारी जांनू। तुम हम बात एकसी मांनू।।
तुम हो हमरा अधिक सनेही। लियो हार सो पूठो देही।।३।।
चोरी में धन जावै जाको। रहै इमान ठिकान न ताको।।
हरे ककै शिर लावै लाको। भेदभाव जांणै नहिं वाको।।४।।
पड्यो नहीं नगरीमें डाको। तुमही में पीयत है नाको।।
झूठोई करता है हाको। दे देहूंदा रचता शाको।।५।।
भिक्षुक वचन साहसे भणता। ए अकाज हमसे नहिं बणता।।
सेवक हो स्वामी नहिं गणता। धिक् जीवन वाहीकीं जणता।।६।।
सूंस सपन चावै सो लीजे। रखो नहीं तो सीखहि दीजे।।
मो शिर कलंक न दीजे स्वामी। मैं नहिं होता निमक हरामी।।७।।

### -: सोरठा :-

बडी बडाकी रीत, सेठ वचन मान्यो सही।
परत न पालै प्रीत, धनसी नामहिं सेठ सुत।।१।।
बोल्यो भ्रुकुटी ताण, हार दिया बिन जाकठे।
ना समझै नादान, कटुक वचन बोलै घणा।।२।।

### -: दोहा :-

ऊपर सेती ऊजला, भींतर राखै घात।
कुवधक माई जाणकर, फिर चाहै कुशलात।।१।।
छुरी कतरणी पेटमें, बगुला भक्त जनात।
हम घरतो सुपरत कर्‌यो, सुण सुण मीठी बात।।२।।
जेर बंध द्याऊं तुमैं, जाऊं करन पुकार।
ऐसी करहूं सांतरी, होय माजनो जार।।३।।

### -: छन्द-प्रभाती :-

उठ चलोनि हमारे सागै, तुम रहत खाटके पागै।।
तोया नाहिं छिप्या घर तागा, तुम कीना गजब अभागा।।१।।
धनपालै करिहै पुकारा, दोउ झगरत राजदुवारा।।
हाकिमसे न्याव न पायो, तब राजा पास सिधायो।।२।।
दे भेंट वणिक सुत गाडो, शिर नाय जोर कर ठाडो।।
देत मुरतवराज बैठायो, पूछै किण कारण आयो।।३।।

एक अरज हमारी राजन्, सुणकै सिध कीज्यो काजन्।।
इन सेवक हार चुरायो, सगरेही नगर बुरायो।।४।।
हमकूंके हार दिवाजे, के जेल फांस गिरवाजे।।
ताडन सैनो सर देवै, भलमांणस हो क्यूं लेवै।।५।।
एती अरज सुनी नृपकाना, सब पूछत सभा सुजाना।।
कहो कौन न्याव सतभाषो, कोइ पक्षपात मत राखो।।६।।
हंस बोले हैं मंत्रि बिचारा, इसने नहिं लीनो है हारा।।
तुम कर देखो निरधारा, यूंहि हो इसका छुटकारा।।७।।
है उत्तम पुरुष पुजारा, यूं उत्तर दियो बुझारा।
तुम कीणी नजर निहारो, ज्यूं होवै सुयश तुमारो।।८।।

-: दोहा :-

तब राजा मनमें लख्यो, पूछत देहिमलास।।
सच्च कहो निर्भय रहो, जै जीवनकी आस।।१।।
हाथ जोड भिक्षू भणै, मैं नहिं चोर हजूर।।
श्रीमुखसे फुरमासजो, सोही करूं मजूर।।२।।
वचन सफा निश्चल हृदो, धीरज रूप निहार।।
साँच झूठ निर्णय कर्‍यो, देखर शुद्ध विहार।।३।।

-: चौपाई :-

राजा मही साहका बेटा। मतना करियो इनसे खेटा।।
उत्तम पुरुष दीखता भाया। के मंत्री राजाका जाया।।१।।
तेजवंत भासत है मैंने। चोर किस बिध चीन्यां तैंने।।
घर जावो मत करो अनीती। राजा निज मुख कही सप्रीती।।२।।
हो उदास चाल्यो है धनसी। काम हमारो किण विध बनसी।।
राजपुत्र की गयो कचेरी। देखी घोटा भेल मचेरी।।३।।
धूमधाम ज्यां होय घणेरी। समर सिंह परताप जणेरी।।
गाती पातर गीत सुरंगा। घूमत हस्ती द्वार तुरंगा।।४।।

-: दोहा :-

श्रीपतिसुत अरजी करी, नरपति सुतपै जाय।।
चकचुंधर गहसाँ पज्यूं, रह्यो बहुत पछताय।।१।।
फूंदा पलटण बावरी, हो रहि कर मदपान।।
खलगुड एकहि भाव है, भली बुरी नहिं जान।।२।।

-: सोरठा :-

श्रीपतिसुत अरुदास, हाथ जोड नमसुत सुणो।।
मनमें घणो उदास, नोसर मिलण उपायमें।।१।।

-: दोहा :-

ए अनुचर हमरे घरां, रह्यो महल इकठोर।।
हम नहिं जान्यूं दूसरो, लियो हारनै चोर।।१।।
मांग्यां नांही देत हैं, पूछ्यां नाहिं बतात।।
भैन हमारी हार बिन, मरै जहर विष खात।।२।।
ह्यां हमरो रहबो किसो, हर कोई घन खाय।
पिता हमारे रूठकै, देश दूसरे जाय।।३।।

-: छंद-प्रभाती :-

इतनी सुन राजकुमारा, मनधारो है क्रोध अपारा।
भ्रुकुटी कस टेडोइ देवै, मानूं धर्मराय अघलेषै।।१।।
सुनि नाहिं हकीकत वाकी, नोसर लेवा धमकाकी।
टुके लोभितधी विचलाकी, तासत है पास बुलाकी।।२।।
पीछै जरेबंध लगवाये, हाथे पाँव जंजीर जडाये।
ऐसे विविध भांत समझाये, विन लिये हार नहिं आये।।३।।
पीछै चंड हुकुम कर दीनो, वाढीकै सुपरत कीनो।
दोऊ हाथहि पाँव कटोवो, चोरंग्यो चोर बनावो।।४।।
जाको सोर सुन्यो घर घरमें, कोऊ सोचत सुधर नगरमें।
श्रीपतिसुत पाप करायो, सोंकन से न्याव गमायो।।५।।
जांकू कोई नहिं लोग शरायो, धिक् धिक् जग दुःख पराये।
सप्तमयो बरस बतायो, जामें हाथ पाँव छिदवायो।।६।।

-: दोहा :-

केउ कहै यो चोर है, केउ कहै यो नाय।।
आपसमें दुनियां लरै, छिप छिप मांऊं मांय।।१।।
देखनको आये सबी, मुख जितनींही बात।।
अपनी अपनी सब कहै, कोउ देखत अकुलात।।२।।
एही चोर ए चोर है, दुर्जन मारै टेच।
विक्रम मनमें सोचता, दिनको पड गयो पेच।।३।।

-: छन्द-प्रभाती :-

जैसा करत तैसह फल पावे, करक फिर क्यूं पछतावै।।
दुखियो होय कूक सुणावै, गोविन्द गुण क्यूं नी गावै।।१।।
देखत तन मनमें धूजै, वाकी बात कोई नहिं बूजै।।
शनिदेव दिखायो चटको, मारत डांकूं मंत्री हटको।।२।।
तिहिं समय मांझ इक तेली, आवै बहल चढ्यो अलबेली।।
कहा कौन देवको मेलो, किण काज लोक हुयो भेलो।।३।।
नृप सुत चोरंग करायो, फिर बाहर नगर गिरायो।।

-: दोहा :-

सांची जन संवादकी, सुनघांची इह बात।
बहल बाँध भूषण बसन, पहर चल्यो उहि सात।।१।।
देखी सुनी न जात है, दयावंत से पीर।
गांगो गांगो नाव है, तेली बहुत सुधीर।।२।।
गागर धर गांगो भणै, नृप सुन वचन सनेह।
करूं धर्मसे पालन, चोरंग्यो मोय देह।।३।।
चोरंग कीनो भृत्यने, किण कारण महाराज।
ईश्वर भय माथे नहीं, छोडी कुलकी लाज।।४।।
सार करावो जीवकी, तुम सुत कियो अकाज।
तेली कहै हजूरसे, बांध धर्मकी पाज।।५।।
मांगेने आदर दियो, बोले दीनदयाल।
तूं लेज्या घर आपने, बहुत जतन कर पाल।।६।।
सुन आज्ञा नर देवकी, हूदां बरस्यो मेह।
बहल चढा चौरंगने, ल्यायो अपने गेह।।७।।
ओषधकी भरती करी, ऊपर तेल लगाय।
खानपान बहुत दिया, जो वाके चित चाय।।८।।

-: दोहा :-

हिंदू तेली गंग, त्यार कियो दुख नाश कर।
नाम धर्‍यो है गंग, घांणी फेरत प्रेमसे।।१।।
साढसती बीताई, शेष रह्या षट् मास जब।
दुख पीडा सहि जाइ, बहल चलावै पांगलो।।२।।
गोविंदका गुण गाय, एक याम रजनी रह्या।
सबको चित्त लुभाय, मधुर राग प्यारी लगत।।३।।
तीज्यां तणो निहार, सावन मास सुहावनो।
काम न करत विहार, नीको लागत गावणो।।४।।
कबु मन चिंता थाय, झुरै पुराणी बातकूं।
मन मिलनेकूं चाय, राज सजा घर कामिनी।।५।।

-: छंद-छप्पय :-

कहां राजगज बाज कहां सुख सेज विलासा।
कां धन संपत ठाठ कहां महलनका वासा।।
कहां हजूरीसभा कहां गढ नौबत बाजै।
कहां तेज वदलदल्ल कहां गुणवंत समाजै।।
एक याम रजनी रहै तबसे रटता रामकूं।
विन मनकी किससे कहूं सर्व सुधारन कामकूं।।१।।

-: दोहा :-

सावनमें डर लग रयो, शीतल चलत सुमेर।
आलापी सुर साधकर, सोरठणी तजु टेर।।१।।

-: राग-सोरठ :-

मांझल रात मदन मरोरै छै जी मांझल रात।।टेर।।
सावन मनभावन घर नाहीं पल पल जी अकुलात।।१।।
घन गरजै लरजत है जिवरा अरु विजुरी चिमकात।।२।।
पूरब हैं नदियां अरु नाले चहूँ दिशिमें बरसात।।३।।
घटा घोर औलर आए बदरा विरहनकूं डरपात।।४।।
प्रीतम प्यारी चढी अटारी पिया मिलनकूं चात।।५।।
सुख दुखकी पिय विन प्यारीको नहिं पूछत बात।।६।।
रामप्रताप तलफती विरहन किस विध हो परभात।।७।।

-: रागिनी-मलारकी :-

जिया किन पूछत कोई बिन टेर।
फूलन सेज तपत तन लागै अँसवन अंगिया भिजोइ।
चिमक चिमक उठ देखत बाला निमिष एक नहिं सोइ।।१।।
घरि घरि छिन छिन बरस बराबर सुबक सुबक कर रोइ।
कोकिल कूकत है पी-पीकर मोर सोर सुन मोइ।।२।।
सावन सुरंगो तीज सुरंगी ऋतु सखि वृथा न खोइ।
रामप्रतापसे हि बडभागी रल मिल पौढत दोइ।।३।।

-: कवित्त :-

सावनकी मनभावनकी, लग रहि आशा पिय आवनकी,
मधुरीसी तान सुनावनकी, बाता कर मत ललचावनकी।
प्यारीसे प्रेम जनावनकी, मोहन रतियां ललचावनकी,
वृंदावन धेनु चरावनकी, राधासङ्ग रङ्ग रचावनकी।
रसहंसकी बात वनावनकी, दुर्लभ रजपंकज पावनकी।
पण्डित रामप्रताप कहै, वर्षा ऋतु सुन्दर सावनकी।।१।।

-: चौपाई :-

नगर माँय सोपो पड जावै। जब सोरठकी बेला आवै।।
आधी रात जबी टल ज्यावै। तब चौरंग्यो नितप्रति गावै।।१।।
कोकिल कण्ठ सुरस दरशावै। सुन सोरठ विरहण अकुलावै।।
गाई सोरठ राग सुभाई। राजसुता मन रयो लुभाई।।२।।
सुनली पीछे मेघ मलारी। विकल भई है राजकुँवारी।।
सुन सुन राग रसीलीचावै। सुन्दर सखी कौन यो गावै।।३।।

हुकुम हमारो सुन री दासी। गीतवान मेरे ल्यापासी।।
पलक एककी विलम न कीजे। जीवदान सखि मोकूं दीजे।।४।।

दासीप्रति वाक्य :- -: राग-कुँवरी :-

कौन गाव दासी चढ देख अटान।।टेर।।
वाट निहारो याकी भीजत जठान।
वेगी ल्याव महलां पीछे खोल लटान।।१।।
कैसी बनी रागिनीकी खूब छटान।
झुक आई बादरी ज्यूं मेघ घटान।।२।।
पूर वहैं नदी नाले टूटत लटान।
मोरला झिंगारै दादर करते सटान।।३।।
पी-पी पुकारे पिक करत कटान।
भारी दुख विरहा वेदन दूर हटान।।४।।
प्योरो मिल्या प्यारी सब थाठ थटान।
रामप्रताप मुसकल कांई राम रटान।।५।।

-: दोहा :-

कुंवरीने दणव्रत लियो, सुणकर राग मलार।
जिन या गाई रागिनी, सो मेरो भरतार।।१।।
दासी पठही प्रेमसे, को गावत है गीत।
वेगी ल्याऊ महलमें, करहूं यासे प्रीत।।२।।
दूजै कान परै नहीं, एह छिपावो बात।
तू चातुर स्यानी घनी, ले आवो आधि रात।।३।।
दासी खोजनकूं चली, शब्दतणी सुध बांध।
घांणी फेरत पांगलो, रयो काम शर सांध।।४।।
धन तै हेरत हेरती, तेलीके घर आय।
गावत गीत चोरंगने, कहती बात बनाय।।५।।
जा दासी तेली घरां, करै जुगतसे बात।
कौन सिपाही घर कहां, किण विध झांगै रात।।६।।
राजसुता कुँवरी थई, विरह पिछाने भेव।
तुमरा गुन हिर है बसै, तन मन करसी सेव।।७।।
मोटी दै मनभावती, बाजै अखन कंवार।
ताते समझै विरहकूं, मत ना करो अम्बार।।८।।
पैली तो सोरठ सुनी, पीछे राग मलार।
विरह दिवानी हो रही, झांकत है पिछवार।।९।।
चलो उहां होसी भली, लेऊं तुरत उठात।
किनहु न देखी आवता, को उन देखै जात।।१०।।

दासी वाक्य :- -: कवित्त :-

सुनो हो सिपाई सूरत है दिपाई मैं मनसे उपाई घांणी क्यूं बाता है।
जात पांत काई कौन तात माई कौन बन्धु भाई कैसी चित चाता है।
कुंवरी जू बुलावै नीका माल जू खवावै झूलामें झुलावे भली राग गाता है।
मोय लेनकूं पठाई देर मत गरो लुभाई विरहन अकुलाई तुम वाके मन सुहाता है।।१।।

पांगल वाक्य :-

बन्धु नहीं भाई नहीं माई मित्र नहीं कोइ सुखकूं सब चात है।
लाज सरम नाखत है औरनकी नराखत है प्रसंग विन भाषतसो लागत अणखात है।
द्रव्य नहीं थिरत पल पलमें खिरता रहत फिरत घिरता ज्यूं दिवस अरु रात है।
विक्रम कहै चेरी साँच मान मेरी विपत पस्या मानसकी कछु नहीं जात है।।२।।

दासी वाक्य :-

एकनकूं ठोर नहिं एकनकूं सोर नहिं एकनकूं चोर गही दुनियां दरशात है।
गुणसेती पिछांण होत गुणसेती रिसांण होत गुणसेती किसांण जोत वेतन ठहरात है।
जात बिन धर्म नांई जात बिनकर्म काई जात बिन सरभ कांई करता छिप घात है।
खबर ना विदेशकी भरभींरै अनेसीकी पूछत हूं बात याते जात करामात है।।३।।

पांगल वाक्य :-

आपहूको रखै धर्म औरनको बिगडै कर्म बडी बात लाज सर्म हिवरै करकात है।
मान नहिं तान नहिं गुण औगुण जान नहिं कडुवा मुख वचन रंकजू कहात है।
कहा कहूं प्यारी मैं हो रयो भिखारी नाहक मत प्यारी सब समैहूकी बात है।
विक्रम कहै चेरी साँच मान मेरी विपत पस्या मानुष की कछु नहीं जात है।।४।।

दासी वाक्य :-

तू गयो है बिकाणै पण धरम है ठिकाणै जाटै सोई जाणै जाल क्यूं बिछात है।
सबही नहिं मोघा क्या निरखते हैं चोघा नफा बहुत होगा सैन समझात है।
कछू नहीं खोवोगा ह्या आनंद सेती रहोगा गुणनके प्रभाव सेती पूछत सब साथ है।
तीजनको तिहार ऋतु सावनकी निहार बीतत है बहार दिन रहे पांच सात है।।५।।

पांगल वाक्य :-

दुनियां है दुरंगी ऋतु सावनकी सुरंगी कामन मन उमंगी प्रीतम गल लागी है।
विरहन मतवारी क्या करत है विचारी अखन राजकी कुमारी सुनत प्रिय रागी है।
मेघ झर लायो झिन मन बरसायो जोवन सरसायो चिमक उठ जागी है।
पठाई है मोय जू लेवेकूं तोय जू जागत नहिं कोय जू सूता बडभागी है।।६।।

दासी वाक्य :-

बाबुल घर मोटी उमर नहिं छोटी निरखतनो कोटी वर पायो न प्यारी जू।
चंदसी उजारी अपसर उंणिहारी पुनि विरहनकी मारी व्याकुल दुख्यारी जू।
तू पुरुष है सयानूं रूप क्यो बखानू सांचीकर मानू फूलो गुल क्यारी जू।
ल्याई परवानूं क्यूं हो रयो दिवानो कहा पूछत है बयानो रहत महलमांहिं न्यारी जू।।७।।

**पांगल वाक्य :-**

भली कही चेरी ह्यां रती नहिं देरी आव निपटनेरी मोयकूं ले चाहिए।
घटा घनघोरी चिमकत वीजुरी जुथोरी बरसत चहुँओरी धीमांसी हालिए।
ऊंची है राजपोर तीखो है जोर तोर सुन लेगा चोर सोर उदय मांहि शालिए।
चिपा लियो चिपकै लेय चली छिपकै सटकी है सपकै पहुँची है मालिए।।१।।
देखकर सुशीली केवल रागकी रसीली सम्मुख होय मीलि गहकै करलालिए।
मनमें अतिराजी करत है इलाजी चोपडाकी बाजी खेलत हंस पालिए।
रंगमहलमें रखायो रंग ढोलियो बिछायो जीव सुख पायो माल खूब खालिए।
खुशी हुए दोऊ भेद लखै नहिं कोऊ नित उठ मुख जोऊ वेह दुःखमती घालिये।।२।।

**-: दोहा :-**

तीज रमंती कामिनी, करत बागरी सहल।
तानिश चौरंग पौचियो, कुंवरी तणै जु महल।।१।।
जाय बठायो महलमें, दीनो पिलंग बिछाय।
सुख दुखकी एकान्तमें, कर बाता हरषाय।।२।।
दोवनकी मीजां मिली, हँस हँस पूछत बात।
रसवंती षड्रागनी, बखत बखतमें गात।।३।।

**-: चौपाई :-**

की झीणी झीणी रग सुनावै। त्यूं कुंवरी कै वो मन भावै।।
देख देख कुंवरी मुसकावै। गाय गाय मन चित्त लुभावै।।१।।
करणै कूं चाहत घरवासा। अखन कुंवारी इतनी त्रासा।।
खेलत रहते चौपड पासा। पहर–वानकूं पड़ी न जासा।।२।।
रूप रंगसे काम नहीं है। जात पांतकी खबर नहीं है।।
पुरुषमात्रकी गाहक तिरिया। सुन सुन बातहि तुरतहि टिरिया।।३।।
तेली टेरत हेरत गांवा। किन देख्यो नर हाथ न पांवा।।
थाकत अपने ही घर बैठो। कार बिहार करत है सेठो।।४।।

**-: कुण्डलिया :-**

सीणा जो लग जीवणा, और न दूजो काम।
रहो एक लवलायकै, रट रसनासे राम।।
रटरसनासे राम ताहिमें रती नमीणां।
नैक रूप सबमांय रूप जाती कुलहीणा।।
हेज द्वेष नहिं काय देख अपणां परकीणा।
सोधो आठूं याम जीवणां जो लग सीणा।।१।।
जगमें थोडा जीवना, क्यूं करते हो क्रोध।
आतमतत्त्व विचारकै, मनकूं गेरो सोध।।

मनकूं गेरो सोध रहो स्वारथ परबीणा।
टुकडा खाय र मस्त प्रेमसे हरि रस पीणा।।
संमझो सार असार ज्ञानका मारग झीणा।
पंडित रामप्रताप जगतमें थोडा जीणा।।२।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां दशमोऽध्यायः ।।१०।।

*****

-: दोहा :-

महलमांय रहता गुपत, बीत गया युगमास।
रंगमहलमें खेलता, पडी पोलिया जास।।१।।

-: छंद :-

सुख बीत गया चौमासा, तब हुआ है महलमें रासा।
टुक पाई है खबर खवासा, कहि रानीजी करो नित पासा।।१।।
कुंवरी थारी कलंक लगायो, छिपकै नर महल बुलायो।
रानी सुन भूप जनाई, दोनूं मिल शीश धुनाई।।२।।
राजा दुख बहुतो पायो, उंहि तपासकर वह बुलायो।
गल मांही तोष घलायो, कारागृह मांझ पठायो।।३।।
चौरंगे कीनी चोरी, श्रीपतिकी बेटी भोरी।
सुनकर घांची घबरायो. अपने शिर लाको आयो।।४।।
कुंवरी अनजल नहिं खायो, दिन सात यूंहि गुदरायो।
विक्रम शनि जबहिं चितास्यो, तब मारण सेंती उबास्यो।।५।।
शनि थीर सुपन दीनी, डर मत कुमती हर लीनी।
अब रतिभर दुःख न घाला, सब बात बैठाघूं साला।।६।।

-: दोहा :-

शनिको ध्यान धर्‍यो जबी, पडो कैदकै मांय।
सूर्यपुत्रकी उस घडी, फिरत भई परछाय।।१।।

-: चौपाई :-

शनिजीको जब लाग्यो दावहिं । छिदा दिया था कर अरु पावहिं ।।
देव शनी परचो दिखलायो । कैद पडा राजा घबरायो ।।१।।
मेरेकूं मान्यो नहिं प्यारा । तिहिं कारण तू भयो दुख्यारा ।।
अब सारी आछी बनवाऊं । तुष्ट दान परचो दिखलाऊं ।।२।।
रह खुशी मत सोची राजा । मंगल का बजवाऊं बाजा ।।
एती कह अंतर होय थाये । तब राजा कछु धीरज पाये ।।३।।

-: दोहा :-

मरणो मांड्यो पुत्रिका, सुन माता गई दोड।
बेटी तू क्यूं दूबली, ल्याऊं वरतोय जोड।।१।।

-: छंद-प्रभाती :-

सखियां संग ले परभाता, आई पद्मावती माता।
पूछत है सगरी बाता, और बेर बेर समझाता।।१।।
चिगरो करती है नजरी, दूंदा देती है सगरी।
दूध बेचत ग्वालन झगरी, सिरसे पटकत है गगरी।।२।।
तैं किसडी बात विचारी, मुख बोलो राजकुँवारी।
कुंवरी भण सुणत मतारी, आधी थी रैन मँझारी।।३।।

-: सोरठा :-

सुर साथ धुतारी, इन गाई राग मलारी।
मोय विरह बावरी कीनी, तब मैं जियमें घर लीनी।।
इन राग गाय मन हरियो, ताहीसे यो वर बरियो।।४।।
चोरंगयो वरहि वरूंगी, नहिं खाकर जहर मरूंगी।
कोइ एक सुनो भावै लाषा, मेरो नहीं किसको साषा।।५।।
विधिना एही लिख दीनी, मोय चोरंगिए घर दीनी।
अजहू बिगडी नहिं माता, तुम जाय अरज कर ताता।।६।।
समझायर वात जचाजे, मोय पांगलियो परणाजे।
सुन रानी मन पछताई, फिर कै राजा पै आई।।७।।

पद्मावती वाक्य :- -: तर्ज-सोरठा :-

कांई हठ मांड्यो म्हारी राज कुंवर।।टेर।।
किण कारण रूठी तू सुंदर ऊठी क्यूं न संवार।।१।।
उगियो भान स्नान कर प्यारी किण बिध कीनी मार।।२।।
सब सखियाँ तलफत विकलत हैं ऊभी तेरे द्वार।।३।।
साजै कुल दोउ मात–पिताको जगनिन्दै चोसार।।४।।
कुंवरी कहै माता घर जावो करस्यूं योहि भरतार।।५।।
कूंण काम है जात पांतसे चोडै कहूंछु पुकार।।६।।
रामप्रताप चढ्या चित तिरिया होय उसीकी लार।।७।।

-: कवित्त :-

देश मुलुक जान्यो सरनाम नहिं छान्यो ठिकांनू है टांन्यो मन मान्यो वरले।
तरुण तेज नरले देखत चित्त हरले सुंदर अति रूप रंग राजाधिराज घरले।
भली ना विचारी लोक कहै जारी होत है उछारी धीरज क्यूं न धरले।
कहती है माता धरम तणी बाता जीवन जुग थोडो बेटी सुयश क्यूं न करले।।१।।

कन्या वाक्य :- -: कवित्त :-

बुरी भली कर मनसे सुख दुःख है जन मनसे धारी है तन मनसे सुनो रंगभीनीरी।
मातलरो तातलरो बंधु पुनि भ्रातलरो चितचीवै जो साहि करो मर्मघात झीनीरी।
मूढ परत खेंटै दैवयोग भेंटै भावीको न मेंटै मैं तो जानकर कीनीरी।
मोटो क्या छोटो खोटो क्या टोटो विधाता नाथ आपने हाथ लेख लिख दीनीरी।।२।।

रानी वाक्य :- -: कवित्त :-

बुद्धि विचलाई दाग कुलकै लगाई कछू व्याहना सगाई पण काहूकी न मानै जू।
बहुती समझाई तलफत अकुलाई उठती ना जगाई काम कियो छानै जू।
ओहि वचन भाष्यो आपन पोजू नाख्योवरताक मन राख्यो नहीं दोष धानै जू।
कह पद्मावती बात मनभावती भूपनै सुनावती याह अपनी जानै जू।।३।।

शूरसेन वाक्य :- -: कवित्त :-

कही बात खारी कछु भलपन विचारी है आपन कन्याकंवारी हम इसडी न जानी है।
मांड दियो मरणो तब जतन कहा करणो वृथा सोच जरणो पीती क्यूं न पानी है।
ठिकाणै सिरब्याता नीकै भूपनै बुलाता रंगमहलांमें झुलाता कैसी विधि ठानी है।
सुनो राजरानी या कन्या है अयानी करत मनमानी कुलकाटकी निसानी है।।४।।

रानी वाक्य :- -: कवित्त :-

राग सुन मोई पुरुष पास थो न कोई चोरंगियो वोई बुलायो कर चोरीसे है।
वाई विन आप सर्‍यो अपने शिर दोष धर्‍यो विचार कर काम कर्‍यो अतिहि छिलोरी है।
रानी कहै राजासूं करो ब्याह बाजासूं कौन कांम ताजासूं कीनो वर जोरी है।
कन्या नहिं थोरी जगनीठना बहोरी लाख वर करोरी कही गज बहूकी गोरी है।।५।।

-: छप्पय :-

देखतही चित चल नाहिं कुल जात पिछांणै।
सुरत भंग मनरंग नहीं गुण अवगुण जांणै।।
छल बल तणो सुभाव कांण मनमें नहिं आंणै।
बकती आल पताल मालखा मोजा मांणै।।
लाज शरम नाखी परै ऊंच नीच भावै किसो।
पुरुषमात्रकी गाहकी मिल ज्यावै चावै जिसो।।१।।

चोरंग वाक्य :-

कहूं राजदरबार कहूं मंत्री संग साथी।
कहूं घोडा निसान कहूं रथ म्याना हाथी।।
कहां रतियां सुखसेज गंध फूलनसे छाई।
कहां दान भंडार पास नहिं जाचक काई।
शास्त्र कहै सोइ साँच है पंथ सनातन हालिये।
पंडित रामप्रताप भण ऊजड कबू न चालिये।।२।।

-: दोहा :-

जात पांत जाण्या विना, किसविध करहूं व्याव।
सुण पंगुलकी वासना, मंत्री मेट्यो स्याव।।१।।
निश्चय उत्तम जात है, क्षत्री अथवा जान।
व्याह करो चितचावसे, भली करै भगवान।।२।।

-: सोरठा :-

बेडी तोड तडाक, पंगलकूं आदर कियो ।
फाटक खुले खडाक, हवामहल डेरो कियो ।।१।।

-: छंद-प्रभाती :-

पढिया जोसी बुलवाये, नृप कन्या व्याह दिखाये।
वर कन्या राशि मिलाये, कहता जोसी फरमाये।।१।।
लिखदीनो है सावो जोसी, यो काम माहमें होसी।
तुम करोजी तियारी तितणै, मलपोह बीतज्या जितणै।।२।।
नृपज्ञान डमडमी पिटती, कछु होनहार नहिं मिटती।
तुम खुशी रहो पितु माता, यहि लिखिया लेख विधाता।।३।।
जब लाग्यो माह महीनो, पंगुल निश्चय वर कीनो।
पांची घर मोहि पठावो, पीछे तुम व्याह रचावो।।४।।
भूपति कीनी फरमासी, देखत चोरंग जग हाँसी।
तुरता तेली बुलवाये, चोरंग ले संग पठाए।।५।।
कह राज सुदृग भर जोता, विधि लेख लिखा सोई होता।

-: सोरठा :-

चोरंगको करमान, गांगोडर चरणा परै ।
भूप जंवाई जान, घिर आई है दिन दशा ।।१।।

-: प्रभाती :-

शुभदिन ब्राह्मणने पूज्यो, विधिस्यूं विन्नायक पूज्यो।
फिर बांन वनोरा कीना, राजनसे मुजरा लीना।।१।।
खैरायत बहु धन दीना, सामान सबी रंग चीना।
पातर बहु नाच नचावै, घांची घर मंगल गावै।।२।।
मंडप तणियां असमानी, ढूंकणनै आया जानी।
सखियां देखत हैं कानी, और नौबत घुरे निसानी।।३।।
जिहिं हार बताता चोरण, चोरंगहि माऱ्यो तोरण।
शुभ कंचन खंभरुपानी, पुसपनके मांच बिछानी।।४।।
मोतियनसे चौक पुराये, भर मंगल कलश धराये।
तोरण पोरीं बंधवाये, चहुं मंदर रत्न जडाये।।५।।

पूजनकी सिधि विध ल्याये, वर कन्या साथ बैठाये।
चोरंग चढ बेठ्यो चोरी, मंगल मिल गावत गोरी ।।६।।
विधि करकै कर जुडवाये, फिर शाखोचार पढाये।
दोन्यां मिल फेरा लीना, बहु दान दायजा दीना।।७।।
दुर्बल केइ आश करंता, याचक होगे धनवंता।
करती सखियां कुलरीती, मनरंजनी मन अति प्रीती।।८।।
फिर पूजा लियो है थापो, पंगलै मान्यो है छापो।
परणंता महल पधार्‍यो, करुणाकर शनि चितार्‍यो।।९।।
हंस खेल करी रंग बातां, ज्यूं लूली मारत लातां।
कर जोड शनीश्चर ध्यावै, हाजर नाजर दिखलावै।।१०।।
परचो दुनियांमें आवै, मन चावै सो फल पावै।

चौरंग स्तुति :-

### -: छंद-भक्तामर :-

नमो नमो शनिदेव जोर कर जो नर तुम शरण परै ।
सब बातनका ठाठ आनंद पाव पलक संकट हरै ।।१।।
सुन नर किंनर नाग अपसरा असुर गन्धर्व यक्षसा ।
मुनि ऋषि ध्यान धरंत सबही सिद्ध चारण रक्षसा ।।२।।

### -: छंद-मंगली :-

क्रूर दृष्टि युग[४] नाग[८] शर[५] रवी[१२] शाद्वि जन्म सू संचरै ।
यम वरुणेंद्र कुबेर शेष नाग नागपति डरै।।१।।
करत पूजन ध्यान व्रत तप तेज वृधभिधारटै ।
सेनहि दुखिया होय कबहुं दरिद दुरजन लघु हटै ।।२।।
पंडित रामप्रताप शनीकी हाथ जोड विनती करै ।
मनवांछित फल होय निश्चय शत्रु गण पायाँ परै ।।३।।

### -: छंद-मनहुलास :-

प्रात: समें उठ हाथ जोडकै बैठ इकंतमें ध्याइए।
सावध्यान होय सूरज सुतका गुण प्रसिद्ध जु गाइए ।।१।।
छाया सुत यम पाप पंगु मोटादेव मनाइए।
हाथ जोडकर करों वीनती चरणांमें चित लाइये ।।२।।
कपिल क्रूर कोणस्थ बभ्रु कृष्ण अंत कथाइए।
सौरि शनैश्चर मंद रौद्र पिप्पलाद स्तुताइए।।३।।
कृष्णवर्ण कराल दृष्टि शिवज शीश उठाइए।
ब्रह्म विनती गौरि कारण कृपादृष्टि जिवाइए।।४।।
रावण सीडी बांधलीनी पडत दृष्टि नशाइए।
राजा विक्रम करत संस्तुति हाथ पाँवजु चाइए।।५।।

तुम बडे महाराज जूहो प्रगट तेज दिखाइए।
ज्यूं जगमांनै साँच तुमरी हमैं पद्दो आइए।।६।।
होत है सब परम आनंद नित्य शनि शिर नाइए।
पंडित रामप्रताप कहता मनचिता फल पाइए।।७।।

-: प्रभाती मंगल :-

सब देवन शिरताज बडे तुम देवता।
आनंद मंगल होय तुमीने सेवता।।१।।
छाया सुत गंभीर मातके शापते।
पायो है पंगु नाम गल्यो बग पापते।।२।।
समतारखै नमाय कही जाय बापते।
सूरज ध्यान लगाय समझली आपते।।३।।
दीनों वरदान शनैश्चर नाम तू।
नवग्रहमें परधान सुधारी काम तू।।४।।
मंदगतीके हेतु नाम तुहि मंद है।
ऊंचो पद है तोय वंश रवि चंद है।।५।।
कोण स्थित यम कृष्ण रौद्र बभ्रूनमें।
सौर्यंतक शनि मंद पिंगल स्तुति समैं।।६।।
एताहि तुमरे नाम प्रभातहि लीजिए।
शनि पीडा नहिं होय योहि वर दीजिए।।७।।
ध्वजिनी धामिनी नार कंकारी कलिप्रिया।
कलही कंटकी चार्या अश्वी महिषी जिया।।८।।
शनि पतनीका नाम भोर उठ जो जपै।
शनि दुःख कबू न होय शत्रुजन वीतपै।।९।।
विक्रम वधू संगात हुया चित चाहता।
पंडित रामप्रताप यूं मंगल गावता।।१०।।
तुष्ट होय शनिदेव मांग वर राजवी।
इसडा दुःख न देहि कहीकै काजवी।।११।।

-: सोरठा :-

छिनमें छार उडात, देख्यो शनिको रूठणो।
कीनो भूपखुडात, देख्यो शनिको टूठणो।।१।।

-: चौपाई :-

रंग महलमें दीना डेरा। ध्यान धरंता हुया सवेरा।।
तुष्ट होय शनि परचो दीनो। हाथ पांव दे अपणो कीनो।।१।।
हाथ पाँव देखत ही दासी। रानी से करती अकलासी।।
निरख जंवाई तजो उदाशी। भूप स्वरूप तेजकी राशी।।२।।

दीनो हार बधाई माहीं । खबर लगी है राजा ताहीं ।।
देखनको लाग्यो है लारो । सुन सुन आवत है जग सारो ।।३।।
देख तमासो देश सरायो । बडभागणरूडो वर पायो ।
राजा रानी हर्ष सवायो । पुण्य हेत बहु वित्त लुटायो ।।४।।
देख रूप सखियां मुसकानी । वधू बहुत दिलमें हुलसानी ।
सब पूछै ए कारण कैसा । भणता विक्रम भुगत्या जैसा ।।५।।
निरखत मस्त भई नर नारी । धन धन कहती दुनियां सारी ।
राज सभा में लियो बुलाई । पूछै सुसरो कहत जंवाई ।।६।।
मैं राजा थो विक्रम भानूं । भूमंडल मैं कहीं न छानूं ।
साढसती जब मोकूं आई । सुपनै दरश दियो शनिराई ।।७।।
ध्यान धरो कर जप तप दाना । नातर कर देऊं कुवधाना ।
मैं उसकी मानी नहिं बाता । कोप होय शनि कीनी घाता ।।८।।
शनी कोप ज्यूं करतो भइयो । त्यूं त्यूं मैं दुख सहतो रइयो ।
साढसती का फल भुगताया । सो जानूं प्रभुजीकी माया ।।९।।
मो शिर ऐसी रची विधाता । ऋद्धि-सिद्धि दे बहि सिधाता ।
साढसती उतरी है मोकूं । कही हकीकत साँची तोकूं ।।१०।।
शनी कोप कर राज गमायो । शनी रोष कर पाद छिपायो ।
शनी तुष्ट होय व्याह रचायो । गीत नाद घर मंगल गायो ।।११।।
सुप्रसन्न शनि आनंद थाया । वै सहि हाथ उसेहि पाया ।
विक्रमके मुखकी सुन बानी । जग सारे साँची कर मानी ।।१२।।
शनी देवगणमें सरदारा । जबसे महिमा बढी अपारा ।
वर दीनो मोकूं शनिराई । तेज प्रताप बढैगो भाई ।।१३।।
पीठ थाप यहि वचन सुनाए । मो ध्याए सुख संपत पाए ।
क्रूर दृष्टिसे करत विहाला । सुप्रसन्न होय करूं निहाला ।।१४।।

-: छंद-भुजंगप्रयात :-

स्तुवे कृष्णवर्णं स्तुवे ध्यान गम्यं स्तुवे नष्ट कर्णं स्तुवे कीर्तिरम्यम् ।
नमः शान्तिकारिन् नमो दुःखहारिन् स्तुवे नन्दवाहं ध्रुवं द्वन्द्वसाहम् ।।१।।
नमो भक्तभर्त्रे नमः शक्तिकर्त्रे नमामीश पाद्माज मान्य प्रतिष्ठम् ।
नमः कोण संस्थाय ते पिङ्गलाय नमो बभ्रु रूपाय वै कृष्णकाय ।।२।।
नमो रौद्रदेहाय ते चान्तकाय यमाय स्तुते सौरये मन्दसंज्ञ ।
नमस्ते शनैश्चारिणो पिप्पलादस्तुताय ध्रुवं वाञ्छितं देहि महाम् ।।३।।

-: छंद-विद्युन्माला :-

जैसी कर्त्ता तैसी भर्त्ता जो बोवैगा सो खावेगा ।
पीडा हारी संपत्कारी गावै मंगल जै जै सारी ।।१।।

### -: चौपाई :-

बहुधा रंग सुरंगत ठानी। राजा हर्ष मुदित भई रानी।।
पत राखी गिरिजादि भवानी। सीर पड्यो है बडै ठिकाणी।।१।।
आनंद सेती खेलत जूवा। मनकी चींत्या सबही हूवा।।
फिरजी मनको आए जानी। सबकूं पुरसी सत पकवानी।।२।।
गांगो बाप बतावै नारी। हँस हँसकै देती हैं गारी।।
विक्रम कहै धरमको ताता। नृपघर सांख जलेबी खाता।।३।।
गांगैकी जागी है साता। शूरसेन करते मिल बाता।
रूडो रंग बन्यो है तब ही। धन्य धन्य कहते हैं सबहीं।।४।।
भांत भांतकी करी मिठाई। पांची सहित जनेत जिमाई।
जीम जूठ कीनी समढूणी। निशि दिन प्रीति बढत है दूणी।।५।।
धन दौलत गज बाजी दीना। म्यानां पीनस रथ दासीना।
अरब खरब दीनी धन माया। सो सब कहनेमें नहिं आया।।६।।
फिरती घिरती तरु वर छाया। विधिने ऐसा खेल बनाया।
खुशी होय और दीना गडणा। छकडा जुडाय कीना बहणा।।७।।

### -: दोहा :-

वणिएके धीरज नहीं, सुण्यो गांवमें सोर।
श्रीपतिसे अब समझसी, जिनां बतायो चोर।।१।।

### -: कवित्त :-

राजाकी आंट बुरी भाईकी फांट बुरी फागणकी छांट बुरी मनमें पछताइए।
चावलकी कांट बुरी मूरखकी नांट बुरी बादीकी चांट बुरी बोलत चमकाइए।
कपटीको नेह बुरो निर्धनको गेह बुरो रोगीको देह बुरो भोर नहिं पाइए।
वैरीको वास बुरो खलहूको त्रास बुरो शलाईको घास बुरो कन्या व्याह रचाइए।।१।।

### -: चौपाई :-

सोची बात सेठ सेठांणी। कन्याको करयो ग्रहपाणी।।१।।
याही बात दीखती स्याणी। निश्चय सेती कन्या व्याणी।
डरतो सेठ जु शरणै आयो। हमने बहुतो पाप बढायो।।२।।
देवरजी तोय कैद करायो। पूत कपूत हमारो जायो।।
अभयदान मोकूं प्रभु दीजे। हम कन्या दूजी परणीजे।।३।।
अवगुण क्षमा करावो हमरा। जनम जनमको दासहुं तुमरा।
विक्रम भणै खुशी होय रहणा। भली बात तुम राजो कहणा।।४।।
मोटां की मोटाई बाता। तुच्छ जीवकी ओर न जाता।
अभयदान दीनो उहि स्याता। जीवदवै कन्या नै व्याता।।५।।

### -: कुण्डलिया :-

वणी बणावै वांणियो, छिनमें पलटै भाव।
गम गांठै सांठै टुटीनूं देखत आपणो दाव।।
देखत अपणो दाव दीन होय हेत जणावै।
पुत्र तणो अपराध देख दिलमें सकुणावै।।
जीवणकी कर आशवास बसणो अपणावै।
स्वारथमें परवीण वांणियों बणा बणावै।।१।।
वांण न छांडै वांणियो झझा करत जुद्धार।
सूणी अणसूणी करै कोऊ कहै हजार।।
कोऊ कहो हजार गरजसे न्होरा काढै।
गहै मौन गंभीर गर्भकूं नर्म सुबाढै।।
तांणपांण होय आप फंदरच पटकै खाडै।
मतलबकी मनवार वाणियो बांण न छाडै।।२।।

### -: सोरठा :-

श्रीपति बात जचाय, जीवन की काडीगली।
आयो व्याह रचाय, ऋतु वसंत पांचै भली।।१।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय
पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायामेकादशोऽध्यायः।।११।।

*****

### -: दोहा :-

पहलो व्याह प्रसंग, माहवदी एकादशी।
इन मन घणो उमंग, राजनसे पांनो पडै।।१।।

### -: चौपाई :-

मोटीको करस्यां मुकलावो। छोटीको अब व्याह रचावो।।
चीज वस्तुका थाठ थटावो। काम दार नीकां समझावो।।१।।
नौबतखाना झुरत निसाना। करत दमामा रचतह धामा।।
लिख पतियां न्योतार बुलाया। ऋतु वसंत बहु रंग घुलाया।।२।।
विक्रम राजा व्याहन आया। सब राजनसे रूप सवाया।।
देखनकूं सब नगर उमाया। भांत भांतका बजार छाया।।३।।
ब्राह्मण जन करता वरणी है। वणिक सुता विधिस्यूं परणी है।
उसी महलमें वींद बठाया। जीमणकूं पांत्या घलवाया।।४।।
वरको बाप वणरयो गांगो। भागज गरो दीखतको लागो।
राजाको आयो रजवाडो। समरसिंह जिन कियो कवाडो।।५।।
जीमरा बैठ्या स्याल भणेउ। कंचन थाल परोसे मेउ।
परजै जीम रही राजा की। भार वण रही बाजाकी।।६।।

कोडी धज पुरजे पकवाना। हर्ष होय मन जीमैं जाना।
गावत गीत रीत तानांकी। गुणी ताल झंफत मानाकी।।७।।
शनि मेटत है कलंक निसानी। राजा निरखत खूंटी कानी।
उगलत हार देखती आलम। साँच झूंठकी पडगी मालम।।८।।
निगलती हार कांठकी खूंटी। हुरमत गई राजकी झूंठी।
उगल्यो हार फेरदी टूटी। शनिदेवकी ऐसीं बूटी।।९।।

-: दोहा :-

सबने देख्यो उगलतो, चित्र मोरडी हार।
अचरज मर्म लखै नहीं, कारण बिन करतार।।१।।

-: सोरठा :-

धनेसि शीश धुनाय, कूडो पडगो बातमें।
सब कोइ कहै सुनाय, नीचो झांकै जातमें।।१।।
करनीको निरधार, सबको भरम मिटाइयो।
सत जगमें थिर सार, सत नत काम करै सबी।।२।।
राजा हो निर्दाष, सुरत करी निज देशकी।
करयो न किनपर रोष, सबसे मीठा बोलकर।।३।।
कुल रीती कर लीन, नेगचार सबही भया।
धनवंता हुए दीन, हृष्ट पुष्ट भूषण वसन।।४।।

-: दोहा :-

गमन विचारयो देशको, शुभ घरि लग्न दिखाय।
तेलीने कर छोड दी, तामें पत्र लिखाय।।१।।
हस्ती घोडा पालखी, रथ कंचनका लार।
दोऊ रानी संगले, दासी एक हजार।।२।।

-: चौपाई :-

पाई रीज वोत वाजंत्री। चोपदार हल कांरा संत्री।
भूमि देव पूजत है तंत्री। सलागीर क्षत्री पूछंत्री।।१।।
कामदार राजी होय मंत्री। चढणेकूं रथ दीनो गंत्री।
रानी बहुत दिया है जेवर। रत्नजडित मुक्ताफल नेबर।।२।।
पाटांवर बहुरी पोसाखो। दिया वस्त्र भूषण अरु लाखो।
नौबत भेर निसान घुराए। इह विध सेती बिदा करार।।३।।

-: छंद-पद्धरी :-

यश कीरति चहुँ दिश अति विशाल, फोजां संग लीनी बहु रिसाल।
हस्तिनकी पंक्ती घनघटान, अश्वन सैंधव नाचत फलान।।१।।
केई बली झूल विनही पलान, केइ रात दिवस रहतेहि ठान।
केई शूरवीर प्यादल सयान, इह भांत हुवो विक्रम पयान।।२।।

शिर आतपत्र कंचन फिरंत, दोउ तरफ देख चंवरां ढुरंत।
तप तेज मांनु सूरज दिपाय, जै जै कह आगे चल सिपाय।।३।।
बंदीजन मंगल गीत गाय, अपने नगरी देखनकुं चाय।
काननमें कुंडल झिलमिलाट, माथे मणि मोती चिमचिमाट।।४।।

-: दोहा :-

मजले मजले चालतां, कीनो बन विश्राम।
प्रगट भयो है आपते, फरकत ध्वजा निसान।।१।।

-: चौपाई :-

वनमें पूठो कियो है मुकामहि। प्रगट्यो घोडो सही लगामहि।।
जींद बनाती काम जरीको। पायो है जिन नाम हरीको।।१।।
पाग झूंद सज रहि है खासा। विक्रम देखा अजब तमासा।।
ओहि अश्व चढ पुरनै आया। दूना हर्ष मन नगर उछाया।।२।।
घर घरमें आनन्द भयो है। राजा सबसे चित्र कयो है।।
सुन सुन परजा अनभ रहिया। इण विध विक्रम गाथा कहिया।।३।।
घाटवाद जैसी चित चहिया। बडा कहै सोइ माना सहिया।
राज्य कन्यो दुनियां सुख दीनी। ओहि घोडै चढ दिगविजय कीनी।।४।।
लोकनमें पर भाव जनायो। संवत् अपने नाम धरायो।
सैस हजार वरस नृप विक्रम जीयो। विन अपराध दंड नहिं दीयो।।५।।
तीन द्वंद्व घटणैका पायु। धर्म पुण्यसे बढती आयु।
होम यज्ञ बहु सुकृत कीयो। हरिलीला अमृतरस पीयो।।६।।
नवग्रहका थरप्या है थानां। दक्षिण द्वार सबी जग जाना।
प्रतिदिन पूजा करत प्रणामा। लोकनमें होगो सरनामा।।७।।

-: राग-कालंगडो :-

मन पुरी अवंती बसरे।।टेर।।
भिक्षा गंगा स्नान करतही पाप जात सब नशरे।
महाकालका दरशन करता मन आनन्द हुलसरे।।१।।
हर सिद्धि ऋद्धि सिद्धिकी दाता सागर सात सुरसरे।
चोरासी शिवलिंगपरसकै चोरासीकूं डसरे।।२।।
काम क्रोध मद मोह निवारो मत ममतामें फंसरे।
नेम धर्म जप तप तीरथ कर्के इह कायाकूं तसरे।।३।।
दृढ आसनपर ध्यान लगावो इंद्रिय रोको दसरे।
मोक्षधाम चलनेकूं प्राणी काठी कम्मर कसरे।।४।।
धन पायो तो धर्म करो ज्यूं दोष धरणिमें धसरे।
सद्गुरु चरण शरण पथरीसै जन्म जेवरी धसरे।।५।।

योग ध्यानका मारग झीणा दीपग मसाल चसरे।
व्यापरयो जलमें थलमें प्रभु ज्योतिर्ब्रह्म समसरे।।६।।
फिर औसर नहिं आवै ऐसो सतसंगतकूं खसरे।
पंडित रामप्रताप हरी भज जगमैं होज्या जसरे।।७।।

-: छप्पय :-

विक्रम जांणी साँच भुकत कर परचो पायो।
खता घणेरा खाय फिरत पाछो खर आयो।।
देव विप्र गुरु बडा सबनकूं शीश नवायो।
धन मालक करतूत भलो प्रभु खेल रचायो।।
धार धार अवतार भक्तनके दुःखमें शरण।
पंडित रामप्रताप कहै है ईश्वर अकरण करण।।१।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय
पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां द्वादशोऽध्यायः।।१२।।

*****

-: दोहा :-

नव बाहन शनिदेवका, कहता है सब कोय।
जिसंडो वाहन देवकै, तिसडोई फल कोय।।१।।

-: चौपाई :-

जिसडो वाहन आवै शनिजी। तिसडोई धरता है छन जी।।१।।
पुण्य पापमें करता मन जी। भली बुरी ताहीसे वनकी।
कोउ खोवै कोउ पावै धन जी। कोउ जीते कोउ हारै रन जी।।२।।
कोउ बेटा कोउ बेटी जन जी। कोउ गूंगा कोउ गरजत धन जी।
कोउ गोरा कोउ कारा तन जी। पंडित रामप्रताप युं भन जी।।३।।
स्थान हानि है गर्दम का फल। घोडा लाभ करत है जल थल।
हस्ती मान प्रतिष्ठा करसी। मेष मृत्युसम आ पद परसी।।४।।
जंबूको जंगल भटकासी। सिंह शत्रु भयक देन पासी।
काक मोतीकी कही निसानी। मृग भयसे भ्रमता दुख खानी।।५।।
मोर मोद मद आनंद कर्त्ता। धन संतान बधू पति भर्त्ता।
यू वाहन का फल पहचांनू। गुप्त भेद बतलाया थांनू।।६।।
एक एक का फल सो सो दिन। झीणूं फल ग्यारा ग्यारा गिन।
ढाइ बरसका क्रम है एही। साढसतीका सुणो सनेही।।७।।
भूर्[1]न्द्व[2]र्क्ष्य[3]ग्नि[3] बाणे[5] युँगाग्निह[4]। रौम[3] वेदै[4] शतपाद प्रमानिह।
लिख शनि मूरत तेलमें डारत। सर्व आपदकूं नर टारत।।८।।

### -: छंद-वीरमोहनी :-

अपणी करणी पडी भुगतणी औरणसे कमतर कांई ।।टेर।।
नोवाहननो पायां ऊपर शनीदेवका बतलाऊं।
जा दिन चार फिरै ता दिन रवि गिणत कारसै समझाऊं।।
बाहन एक बतावै केई पलटत राशिउं हिराऊं।
जैसा नाम सफल है तैसा सोई साँचि चितमें चाऊं।।
ज्ञान ध्यान कहुं कर्मनकी गति ज्योतिषकी लीनी छाईं।।१।।
नव वाहनका भेद सुनांऊ जुदा जुदा तेरे तांई।
गर्दभ मेष शृगाल सिंह जू काक हिरण शुभ है नांई।।
घोडा हाथी मोर कहावै तीन भला है उनमांई।
दुःख सिंह शत्रू भय नाहीं भैसा मेष पलट थांई।।
हंस हिरणका लखो विपर्यय दिग्वाहन मैं दरशाई।।२।।

### -: दोहा :-

छोटा मोटा समझल्यो, गुणा तणै परभाव।
ऊंच नीच चोडै दिखै. ज्योतिष राह बताव।।१।।

### -: चौपाई :-

एक मास रहता है भानूं। सवा दोय दिन चंद्र पिछानूं।।
डेढ मास शशीपर मंगल। वक्रादिक बहु मास उदंगल।।१।।
बुध सितमा गुरु विश्वे मासा। अती चारांका बडा जुरासा।।
शनी बरस रहता ढाई। ए ज्योतिष गति रीत बताई।।२।।
राह-केतुका मास अठारा। एक राह जानत है सारा।।
उदयास्तादिक की जो रीति। लख लेवो गुरुसे कर प्रीति।।३।।
धातु भेद नहिं होता छोटा। काम किया ते जाणूं मोटा।
ब्रह्मादिक इसमें है हेतु। तीन लोककी बाँधी सेतू।।४।।

### -: छंद-कुंडलिया-अमृतध्वनी :-

सबसे मोटा देव शनि, कर देखो निरधार।
जाको ऊंचो बैठणो, सो सबमें सरदार।।
सो सबमें सरदार, देव मंडल सब ऊटा।
अपने-अपने राह चलत, ज्यूं अग्नी बोटा।।
सब समान गति जान भौमते लोट पलोटा।
भणै सूर्यसिद्धान्त शिरोमणि ज्योतिष चोटा।।१।।
ज्योतिष चोटा शीशमणि सीखो गुरुमुख ज्ञान।
तारा मंडल दीखता, नलका वेध प्रमान।।

नलका वेध प्रमान, जाणकर छांण चहोटा।
भक्ती कर्‌यां सुख होय ज्ञानका एही सोटा।।
टुक जीवनके हेत बांध मत पापकि पोटा।
गर्भवासके मांय लियाते ऊंधा झोटा।।२।।
ऊंधा झोटा तै लिया गर्भवासके मांय।
भूल्यो सिरजनहारनू बाहर ही आतांय।।
बाहर ही आतांय देख तिरियारम झोटा।
समझत नांही मूढ मस्त है खायर रोटा।।
साँच न भाषै एक झूठका मारत गोटा।
यमकी भौगे त्रास करम करता है खोटा।।३।।
खोटा करता करमकूं धर्मतणी नहिं सोझ।
विषयनमें लपट्यो फिरै, ज्यूं जंगल को रोझ।।
ज्यूं जंगलको रोझ छाँड गड बूंटी कोटा।
पूजी दई बिगार सेही शठ भोगै टोटा।।
पंडित रामप्रताप कहत मांनू मत छोटा।
करामातकी किमत देव शनि सबसे मोटा।।४।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय
पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां त्रयोदशोऽध्यायः।।१३।।

*****

## -: दोहा :-

हस्त होय रविवारने, ता दिनमें धर नेम।
पूजा व्रत रविकी कर्‌यां, कुशल होत है क्षेम।।१।।
चित्रो होवै सोम दिन, सात बार पर्यंत।
होम दान पूजन कर्‌यां, विपत दुःखको अंत।।२।।
मंगलके दिन स्वातिने, व्रत निश्चयसे धार।
विधि विधान पूजा कर्‌यो, बेडा होज्या पार।।३।।
बुध दिन होय विशाखिका, ता दिन पूजासार।
ऋद्धि सिद्धि कारज से, होता मंगलचार।।४।।
अनुराधा गुरु दिन भलो, ता दिन पूछन होम।
सप्तम आवै फिर गुरु, इतणैमें थन दोम।।५।।
शुक्रवार ज्येष्ठा हुवै, जप तप नेम करंत।
तुष्ट होय अपराध क्षिम, पीडा दुःख हरंत।।६।।
शनिवारे शनिव्रत गहै, वरस एक नर नार।
तेल कुंभमें डारिकै, कर पूजा सुखकार।।७।।

कृष्णा गो तिल लोह दे, कालो कंवल हेम ।
पंडित रामप्रताप कह, एही शनिकी टेम ।।८।।
पंचामृतसे कर शुची, माषभक्त बलिदान ।
शनि मूरतकै देनसे, अन धन दूणा जान ।।९।।
सबसे मोटो है शनी, मतना मांन अनेस ।
श्रावणमें शनिदेवकी, पूजा करो विशेस ।।१०।।
अरिष्ट कष्ट व्यापे नहीं, राज करै बहुमान ।
निर्धन तन मन तासकै, निशिदिन धरियो ध्यान ।।११।।
राहु केतुको नेम व्रत, शनि दिन वा बुधवार ।
तिह होरा पूजन करो, दान वित्त अनुसार ।।१२।।
गूगल हिंगुल मैणसिल, महिष सींग मैताल ।
राहू पीडा नशत है, स्नान कर्‍यां तत्काल ।।१३।।
शूकर कृत गिरि अग्रकी, माटी छेली दूत ।
खड्गपात्रसे स्नान कर, तुष्ट केतु सुख कूद ।।१४।।
तत्तद्ग्रह स्तुति मंत्र जप, समिधा होम विधान ।
तत्तद्दिन वेला करो, ब्राह्मण भोजन दान ।।१५।।
ग्रह पीडा होवै नहीं, दूर होत सब कोद ।
देवदारु जल न्हाइए, शरपुंखा अरु लोद ।।१६।।
खील प्रियंगू कुठवला, सीस्यूं हलदी मोथ ।
दोष हरणमें ए भली, जैसे गुडस्यूं चोथ ।।१७।।

-: कवित्त :-

सुपनेकी माया झूंठा मोह जाल छाया काची है काया ए सुनी वेद वाचा है ।
समझो गुरुज्ञानी तजकै अभिमानी ज्ञानी को निसानी मन मस्त हुया चाता है ।
इतिहास सुन सारे रहना हुसियारे चेत दुख बिसारे खूब रंगराचा है ।
पंडित कहै रामप्रताप सनाम सिधरी छाप बुद्धबल आपके जचा दिया जाचा है ।।१।।
लोकानुगत बात ठानै परमारथ नाहिं जांनै सबी लोग सत्यमानै देख्यां देखमाचा है ।
मन चिंत्या काम करै दारिद दुख होत पण दुर्जनके साल शल्य हिए माहिं पाचा है ।
धन्य धन्य करतसही रचना सुन बात नई बिष्या भई विक्रमसे शनिदेव साँचा है ।
कथा एह भारी सुनियो नर नारी सब रामप्रताप पंडित कही वेदवाचा है ।।२।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय
पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां चतुर्दशोऽध्यायः ।।१४।।

*****

-: दोहा :-

धूप दीप फल पुष्प लै, चंदन अक्षइ पान।
पूंगीफल श्रीफल धरो, पीछे सुणो पुराण।।१।।

-: सोरठा :-

प्रथम गणेश मनाय, मंगल काम परूं धिए।
विघ्न कवू नहिं थाय, साचै राचै रामजी।।१।।

-: चौपाई :-

तेल लोह कंचन तिल भैंसा। दान नाम जप शनिका सैसा।।
कंवल रत्नकसार जिमाइ। साढसती का कह्या उपाइ।।१।।
केताके मन एहि सुहाई। शनिके दिनकर बडा खुवाई।।
गुजराती ब्राह्मण डाकरसी। तीन दान दीना दुख हरसी।।२।।
एही दान तनां अधिकारा। राहु केतु शनि जांनै सारा।।
दान खड्ग दुर्बल ब्राह्मणका। मतलब एह शुद्ध पूछनका।।३।।
शनिपुराण जो सुनै सुनावै। से मनवांछित फल ही पावै।।
दुर्मति दारिद दूर हटावै। विनया योही खेत लटावै।।४।।
सिंह बाघ गज भीति मिटावै। झ्याझस मद खतरो नहिं खावै।।
हो मंत्री नृप काम जमावै। सुख संपत संतान बढावै।।५।।
रोगी सुनै रोग मिटता है। प्रबल हुवो शत्रू सिटता है।।
बांझ सुनै जनती है बेटा। दुश्मनका हटता है खेटा।।६।।
राजा सुनै भूमि पाता है। भूखा धाय धाय खाता है।।
निर्धन सुनै होत धनवंता। सुनै चौधरी राजमंनता।।७।।
ब्राह्मण सुनै लभत है विद्या। विजय होय शत्रुसे जिद्या।।
क्षत्रिय सुनै देश परसिध्या। वणियां सुनै पावते रिध्या।।८।।
सुणै विरहिणी पालै पनकूं। पति घर आवै ल्यावै धनकूं।।
सबी बातका खोल्या व्यांना। मांगलीक सुनए अख्यांना।।९।।
वस्त्राभूषण वाहन चारू। दान दक्षिणा श्रद्धा सारू।।
खुशी होय कर विप्र जिमावै। अरिष्ट कष्ट नेरे नहिं आवै।।१०।।

-: कवित्त :-

सबका उपयोगी साध संत योगी सुनता रसभोगी रीत है रकानकी।
मूरख नहिं लखै भेद उलटो मत करै खेद निरखत है छेदसे न समझत नां सुजानकी।
पुण्य श्लोक नाम रटै प्रह्लाद लियो सिरकै सटै जनम शत पाप कटै बिक्रकै बखानकी।
पंडित कहै रामप्रताप मिटती है तीन ताप हर्षत दिल आपु आय कही बात ज्ञानकी।।१।।

-: दोहा :-

जोड सुनाऊ आदसे, मूल कथा समझाय।
शनिपुराण उत्तम कही, सुनो प्रेम चितलाय।।१।।

### -: चौपाई :-

प्रथमहि कीनो मंगल चारी। भरतखंड महिमा विस्तारी।।
दूजा ध्याय सुपन की बाता। खोल भेद समझाया साथा।।१।।
तीजीमें दशरथ संवादा। लिखे मुजब भाष्यो नहिं जादा।।
चोथी में सौदास प्रसंगा। सुन सुन उपजे प्रेम तरंगा।।२।।
पंचम में हरचंद कथा जूं। मार्कंडेय पुराण यथाजू।।
षष्ठम नल इतिहास थयो है। दमयंती दुख बहुत सयो है।।३।।
सप्तमध्याय इही गुण गाया। अष्टमसे विक्रम गुण थाया।।
नवमाध्याय ठिकाणै ठायो। दशमीमें शिर कलंक चढायो।।४।।
एकादशमें व्याह रचायो। द्वादशमें पीछो घर आयो।।
तेरहि वाहन भेद जनायो। विक्रम नवग्रह थान बनायो।।५।।
चौदहिमें ग्रहका व्रत नेमा। पंदरहिमें फल मंगल क्षेमा।।
इह विध पांच दशक अध्याया। शनिपुराण सुनियो मन्न भाया।।६।।

### -: छप्पय :-

पंडित रामप्रताप गुणी है सबमें नीका।
श्रीभागवत पुराण जिनूंपर कीनी टीका।।
कवि मनमें आनन्द नई सुण रचना नीकी।
रवि आगे जिम चंद्र कथा उर लागै फीकी।।
हरीतवाल द्विज गौड है ब्रजनंद वंश प्रकाशिया।
शेखावाटी बीचमें सहर फतेपुरवासिया।।१।।
भाषा तणूं प्रबंध सुणैगा जो नर नारी।
सुप्रसन्न शनि होय पूरसी मनस्यासारी।।
गावै वेद पुराण देवकी महिमा भारी।
दान पुण्य जप होम किया सबके सुखकारी।।
पंडित रामप्रतापजी रची कथा शनिदेवकी।
विघ्न विलय हो ज्यात हैं सुख पावैंगे सेवकी।।२।।

### -: कवित्त :-

उगणीसे पर एक ऊनचालिस चितारो। मृगशिरमा मुनि सात तिथी वार शनि कृष्ण पखारो ।।
धर्म नीतिकी बात शील संतोष विचारो। भक्ती ज्ञान विराग प्रगटहोवे निस्तारो ।
यथा बुद्धि मन शुद्धि से कथा शनैश्चरकी करी। पंडित रामप्रताप पर सुप्रसन्न होवो हरी।।१।।
उगणीसै संवत् गुणचारी। मृग शिरवदि सातै शनिवारी।।
आनंदसे पूरण भई सारी। शनिपुराण सुन मंगलकारी।।१।।
तुष्टमान होय राधा प्यारी। मनमोहन सुन अरज हमारी।।
आश बडी लग रही है थारी। बेडा कृपयासे कर पारी।।२।।

इति शेखावाट्यन्तर्गत सहर फतेपुरबासी हरितवाल गौडब्राह्मणब्राजलालीय
पंडित रामप्रताप विरचितायां शनिकथायां पञ्चदशोऽध्यायः।।१५।।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान ;

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

**गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,**
**लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो**
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्यावाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष ०२५१-२२०९०६१.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS